कवित्त रामायण



मतबअ़ महम्मदी में एहतमाम महम्मद वज़ीरख़ाँ के छपी

श्री गणेशाय नमः

॥ अथ कवित्त रामायण बाल काण्ड लिख्यते ॥ सवैया ॥

अवधेस के द्वार सकार गई सुत गोदहि भूपति लै निकसे ॥ अ
व लोकि हौं सोच विमोचन कौ ठगसी रहि जे न ठगै धक से ॥ तुल
सी मन रंजन अंजित अंजन नैन सु षंजन जात षसे ॥ सजनी
ससि में सम सील उभै नव नील सरोरुह से विकसे ॥ १ ॥
पग नूपुर औ पहुंची कर कंजन मंजु बनी मनि माल हिये
नव नील कलेवर पीत झगा झलकै पुलकै नृप गोद लिये ॥
अरविंद से आनन रूप मरंद अनंदित लोचन भृंग पिये
मन में न वसे अस बालक जो तुलसी जग में फल कौन जि[ये]
२ ॥ पद कंजनि मंजु बनी पनहीं धनु ही सर पंकज पा[नि]
लरिका संग खेलत डोलत हैं सरजू तट चौहट हाट हिये ॥ तुल
सी अस बालक से नहि नेह कहा जप जोग समाधि किये
नर वै खर सूकर स्वान समान कहो जग में फल कौन जिये
३ ॥ तन की दुति स्याम सरोरुह लोचन कंज की मंजुलताई ह
रैं ॥ अति सुंदर सोभित धूरि भरे छबि भूरि अनंग की दूरि ध[रैं]
दमकैं दतियां दुति दामिनि सी किलकै कल वाल विनोद भरैं ॥
अवधेस के बालक चारि सदा तुलसी मन मंदिर में विहरैं ॥
४ ॥ कबहूं ससि मांगत आरि करै कबहूं प्रति बिंब निहारि ड
रैं ॥ कबहूं करताल बजाइ कै नाचत मात सबै मन मोद भरैं ॥ कब
हूं रिस भागि करै हठि कै नव लेत सोइ जिहि लागि अरैं ॥ अव
धेस के बालक चारि सदा तुलसी मन मन्दिर में विहरैं ॥ ५ ॥
दंत कि पंगति कुन्दकली अधरा धर पल्लव खोलन की ॥ चप
ला चमकै पट पीत लसै छबि मोतिन माल अमोलन की ॥ घुंघ

रारि लहैं लवकैं मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलन के॥ नौछाव
रि प्रान करैं तुलसी बरि जाउ लला इन बोलन की॥ ६॥ सर
भूधर नीर हि आतफिरैं रघु बीर सखा अरु बीर सबै॥ धनुहीं
कर तीर निषंग कसे कटि पीत दुकूलन वीनफबैं॥ तुलसी
तेहि औसर लावनिता दश चारि नौ तीनि इकीस सबै॥ मति
भारति पंगु भई जो निहारि बिचारि फिरी उपमान पबै॥ ७॥
मनहरन॥ छोनी में के छोनी पति छाजे जिन्हे छत्र छाया छोनी
छोनी छाय आये छिति निम राज के॥ प्रबल प्रचंड वरि वंड
बरि वेषु वपु धरिबे कौं बोलै वैदेही वर काज के॥ बोलें बं
दी बिरद बजाय वर बाजनेउ बाजे बाजे वीर बढ़ धुनत स
माज के॥ तुलसी मुदित मन पुर नर नारि जेते वार वार हे
रे मुख औध मृग राज के॥ ८॥ सीय के स्वयंवर समाज रा
ज राजनि के राजनि राज महा राजा जाने नाम के॥ पवनपुरं
दर कृसानु भानु धनद सौं गुन के निधान रूप धाम सोम कामें
वान बलि बाल जातु धान पति सारिषे जिवे गुमान सदा सालि
संग्राम के॥ तहां दश रत्थ के समर्त्थ नाथ तुलसी के च प
रि चढ़ायौ चाप चंद्रमा ललाम के॥ ९॥ मदन मथन पुरद
हन गहन जानि आनि के सबै को सारि धनुष गढ़ायो है॥
जनक सिहासि जहां भले भले भूमि पाल किये बल हीं बल आ
पनो बढ़ायो है॥ कुलिस कठोर कूर्म पीठि ते कठिन अति ह
ठिन पिनाक काहू चपरि चढ़ायो है॥ तुलसी सो राम को स
रोज पानि परसत ही टूट्यो मानो वार ते पुरारि ही पढ़ायो
है॥ १०॥ छन्द छप्पै॥ डिगति उर्वि अति गुर्वि सर्व पब्बै समु
द्र सर॥ व्याल वधिर तिहि काल विकल दिगपाल चराचर
दिग्गयंद लरखरत परत दस कंध मुक्ख भर॥ सुर विमान
हिम भानु भानु सं घटित परस्पर॥ चौंके विरंचि संकर सहि
त कोल कमठ अहि कल मलेउ॥ ब्रह्मांड षंड कियं चंड
धनु जबहि राम सिव धनु दलेउ॥ ११॥ मनहरन॥

लोच नाभि राम घन स्याम राम रूप सिन्धु सषी कहैं सषी सौ
तू प्रेम प्रान पालरी ॥ बालक नृपाल जू के ष्याल ही पिनाक
तोरयौ मंडली कमंडली प्रताप दाप दालिरी ॥ जनक को सिय को
हमारो तेरो तुलसी को सब को ही है मै जु कसौ काल री ॥ कौसि
ल्या की कोषि परि तोष तन वारिये राय दशरत्थ की बलैया
लीजे आलिरी ॥ १२ ॥ दूब दधि रोचन कनिक थार भर भर
आरती संवारि वरनारि चली गावती ॥ लीनै जै माल कर कं
ज सो है जान की कै पहि रावो राघो जूकौं सषियौं सिखावती ॥
तुलसी मुदित मन जनक नगर जन झांकति झरोषे लागी सोभा
रानी पावती ॥ मनहु चकोरी चारु बैठी निज ठौर ठौर पावत चंद
किरनि पल कौन खावती ॥ १३ ॥ नगर निसान नभ दुंदुभी विमा
न चढि गान वै कै सुर मुनि नारि नर नाचहीं ॥ जय जयति हूं प्र
जय माल राम उर बरषै सुमन सुर वधू रूप रच हीं ॥ जनक
को प्रन जयो सब को भाव सो भयो तुलसी मुदित मन रोम
राच हीं ॥ सांवरे की गोर गोरी सोभा पर त्रन तोरि जोरी जी
वो जुग जुग जुवती जन जांच हीं ॥ १४ ॥ भले भूप कह
ते हैं भले भदेस भूपति सौं लोक लखि बोलिये पुनीत री
त मारषी ॥ जगदंबा जानकी जगत पितु रामचन्द्र जानि जि
य जो हौ जोन लागै मुष कार की ॥ देषे हैं अनेक ब्याह सुनें है
पुराण वेद बूझे हैं सुजान साधू नर नारि पारषी ॥ ऐसे सम स
मधी समाजन विराज मान राम सेन वर दुलहिन सिया सा
रषी ॥ १५ ॥ सवैया ॥ दूल्हा श्री रघुनाथ बने दुलही सिय
सुन्दर मन्दिर माहीं ॥ गावत गीत सबै मिलि दंपति वेद जु
वा जुरि विप्र पढी हीं ॥ राम को रूप निहार ते जानकी कंकन
के नग की पर छाहीं ॥ ताते सबै सुधि भूलि गई कर टेकि रही
पलटा रत नाहीं ॥ १६ ॥ मन हरन ॥ बानी बिधि गौरी हर से
स गनेस कही सही भरि लोमस भुसुंडि बहु बारिषो ॥
चारि दस भुवन निहारि नर नारि सब नारद सो पर दान

नारद सो पारिखो ॥तिन कह्यौ जग में जग मगाति जोरी एक एक
दूजी को कहै या सुनि पावक पारिखो ॥ रमा रमा रमत सुजा
न मन मानि कहि सिय सी न तीयन पुरुष राम सारिखो ॥
१७॥ भूप मंडली प्रचंड चंडीस को दंड खंडो चंड बाहु दंड
जाके ताही सों कहत हीं ॥ कठिन कुठार धार धरिवे की धी
रताहि वीरता बिदित वाकी देषिपे चहत हैं॥ छोनि मैन छा
डी छिपी छत्रिय के छोना अब छोनिप छपन वाको बिरद वह
त हैं॥ तुलसी समाज राज तजि सो बिराजै आजु गाजै राज रा
न मृग राज ज्यौं गहत हौ ॥ १८॥ कवित्त ॥ पायौ हतौ न पवन
सतायो हतो सरद माह सर गयौ सरस कै यो युग कै डस्यौ
हतौ ॥ बिना रंग रोगन कौं सकुचत हाथ छुवत तानि कै न
तान्यौ कछू जोरन कस्यौ हतौ ॥ छिमावन्त हूजै मोपै नयों
बन बाय लीजै जीरन पुरानो जानि तुम हूं धस्यौ हतौ॥ ला
ये कवन सासन प्रकाश न दिखावो मुनि चहिये सो कहिये पै
सरासन सस्यौ हतौ ॥ १९॥ कस्यौ अपराध ना जीवत छाडि
हौं तोरि कै वाको बनावत जूनौ ॥ वंश समेत कुगरन काढि
हौं छोटे और बडे से करौ घर सूनौ ॥ पोटे बडे हौ बुटाई भरे तु
म घाव कै वापै लगावत लूनौं ॥२०॥ सामने आय दिखावते
जोर सस्यौ मुनि कै औ जस्यौ दुज दूनौ ॥ २१॥ थांभिये कोप कृपा
करिये डरिये तुम सौं पुनि और हसी कौ ॥ मारन कौ मरिवे
कौ बडो डर पाप चढै भ्रम जात न जी कौ॥ चहिये सो कहिये भृगु
नाथ हमै वदि बोलि वो सोभित फीकौ॥ राजन कौ सर येही
वडो छिज राजन कौ कर जोरि वो नीकौ॥ २२॥ तुम सेन कही
काहु सुनी नही काहू सें सब नृपत षचै है कर जोरि कै ॥एक
नेर कहौ हू की सबेर डारे मधि सोई अब आनि ज्वाल प्रगटी
वहोरि कै॥ छोनी मेन छिपै छाडो छत्रीय को छोना अब कठि
न कुठारन सों डारि हौं अहोरि कै ॥ हूजे बीर आसन प्रकास वदि
पावो मोहि आये तुम सासन सरासन तोरि कै ॥२३॥ निपट निहारि

बोले वचन कुठार पानि मानें त्रास अवनी पीते मानों मौनता
गही॥ रोषे माषे लषण अकनि अन बौंही बातें तुलसी विनीत वा
नी विहँसि ऐसी कही॥ सुजस तिहारे भरे भुवनन भृगुनाथ प्र
गट प्रताप आप कहो सो सही॥ टूटौ सोन जुरैगो सरासन रु
मेश चूको रावरी सरीक तापि नाक में गही॥ १९॥ सवैया॥ ग
र्भ के अर्भन काटन को पटु धार कुठार कराल है जाको॥ सो
ई हौं बूझत राज सभा धनु कौन दल्यो दलि हौं बलि ताको॥ लघु आ
नन उत्तर देत बड़े लरिहैं मरिहैं करिहैं कछु साको॥ गोरो गरूर
गुमान भरो कहौ कौसिक छोटो सो ढोटा है काको २०॥ मनहरन
मख राखिवे के काज मेरे राजा संग दिये दले जातुधान जे जिते
या विबुधेस के॥ गौतम की तिया तारी मेटे अघ भूरि भारी लोचन
अतिथि किये जनक जनेस के॥ चंड बाहु दंड बल चंडीस को दंड षं
ड्यौ व्याही जानकी जीते नरेस देस देस के॥ सांवरे गोरे सरीर
धीर महावीर दोउ नाम राम लषन कुमार कोसलेस के॥ २१॥ स
वैया॥ काल कराल नृपालन के धनु भंग सुनै फरसा लिये धा
ये लछि मन राम बिलोकि सप्रेम महारिस ह्वा फिरि आँखि दि
खाये॥ धीरसिरोमन बीर बड़े विजयी विनयी रघुनाथ सुहा
ये॥ लायक हो भृगुनायक को धनु सायक सौंपि सुभाय सि
धाये॥ २२॥ इति श्री कवित्त रामायणे बालकाण्ड संपूर्णं॥ १॥

अथ अयोध्याकाण्ड आरम्भः

सवैया॥ कीर के कागर ज्यों नृप चीर विभूषन उप्पम अंगन
पाई॥ औध तजी मग वास के रूख ज्यों पंथ के साथ लों लो
गा लुगाई॥ संग सुबंधु पुनीत प्रया मनो धर्म कृपा धरि देह
सुहाई॥ राजिव लोचन राम चले तजि बाप को राज बटा
उ की नाई॥ २३॥ कागर कीर ज्यों भूषन चीर सरीर लसै तजि नी
र ज्यों काई॥ मातु पिता प्रिय लोग सबै सनमान सनेह सुभा
य सगाई॥ संग सुभामिनि भाई भलो दिन द्वै जनु औध हुते पहुना
ई॥ राजिव लोचन राम चले तजि बाप को राज बटाउ की नाई २४

मनहरन ॥ सिथल सनेह कहै कौसिल्या सुमित्रा सों मैं लखी न
सब विसमी भगनी ज्यों सोहै ॥ कहै मोहि मैया कहौ मैं मैया हौं भ
रतकी लै हौं हौं बलैया तेरी मैया कैकई है ॥ तुलसी सरल भाइ र
घुराय माय मानी काय मन मानाहूं न जानी कुमतई है ॥ वाम वि
धि मेरो सुख सिरस सुमन समता कौ छल छुरी कोह कुलिस लैटई
है ॥ २५ ॥ कीजे हासा जीजे सुमित्रापरि पाय कहै तुलसी सहावविधि
सोई सहियत है ॥ रावरो सुभाव राम जन्मते जानियत भरतकी मा
त कौ किये सोच हियतु है ॥ जाय राज घर व्याहि आई राजघर म
हाराज पूत पाये हूं न सुख लहियतु है ॥ गेह सुधा गेह में मृगहि म
लीन कियो ताहू पर बाहू बिनु राहु कहियतु है ॥ २६ ॥ नाम अ
जामिल से खल कोटि अपार नदी भव बूडत काढे ॥ जो सुमिरे
गिरि मेरु सिला कन होत अजा खुर वारिधि वाढे ॥ तुलसी जिहिके
पद पंकज ते प्रगटी तटिनी जो हरै अघ गाढे ॥ ते प्रभु सौं सरिता तरि
वे कहु मागत नाव करार हु ठाढे ॥ २७ ॥ राहि घाटते थोरि क दूरि
अहै कटिलौं जल थाह दिखाइ हौं जू ॥ परसै पग धूरि तरै तर
नी घरनी घर क्यौं समुझाइहो जू ॥ बरु मारिय मोहि बिना पग धो
ये हौं नाथ न नाव चढाइहौं जू ॥ तुलसी अव लंवन और कछू ल
रिकाहि कहु भांति जिवाइ हौं जू ॥ २८ ॥ रावरो दोष न पायन को पग
धूरि कौ भूरि प्रभाव महा है ॥ पाहन तैं वन वाहन काठ को कोमल
है जल पाय रहा है ॥ तुलसी सुनि केवट के वर बैन हसे प्रभु जानकी
ओर हहा है ॥ पावन पाव पखारि कै नाव चढाइहौं आयसु होत कहा है
॥ २९ ॥ मनहरन ॥ पात भरी सहरी सकल सुत वारे वारे कै वट की
जाति कछु वेद न पढाय हौं जू ॥ सब परिवार मेरो याही लागि रा
जा राम दीन वित्तहीन कैसे दूसरी गढाय हौं जू ॥ गौतम की घर
नी ज्यौं तरनी तरैगी मेरी प्रभु सौं निषाद ह्वै के बाद न बढाय हौं जू ॥
तुलसी के ईस राम रावरे सौं सांची कहौं बिना पग धोये नाथ ना
व ना चढाइ हौं जू ॥ ३० ॥ जा पद पुनीत वारि सिरसि वहै पुरारि
च पथ गामिनी जस वेद कहैं गाय कैं ॥ जिन कौं जोगींद्र मुनि

चूंद वेद देह दम करत विराग जोग जाप मन लाय कै ॥ तुलसी सोजि
नकी पग धूरि परसि अहिल्या तरी गौतम सिधारे गृह गौनों सो
लिवाय कै ॥ तेई पांइ पाइ कें चढाऊं नाव धोये विन ह्वैंन पठावौं
नीके हैं हे नह साथ कै ॥ २१ ॥ प्रभु रुख पाय कै बुलाई बाल घरनि
कै बंदि कै चरन कहूं दिसि बैठे घेरि घेरि ॥ छोटो सो कठौता भरि
आन्यों पानी गंगा जू को धोय पाय पियत पुनीत वारि फेरि फेरि
॥ तुलसी सराहैं ताको भाग सानुराग सुर बरषै सुमन जय जय कहैं
टेरि टेरि ॥ विविधि सनेह सानी बानी असयानी सुनि हंसे राघो जा
नकी लषन तन हेरि हेरि ॥ २२ ॥ सवैया ॥ पुरतें निकासी रघु वीर वधू धरि
धीर दियें मग में पग द्वै ॥ झलकी भरि भाल कनी जल की पट सूखि ग
ये मधुरा धर वै ॥ फिर पूछत हैं चलनो अब केतिक पर्न कुटी करि हौ
कित ह्वै ॥ तुलसी लखि कै तिय आतुरता पिय के जुग नैन चले जल
च्वै ॥ २३ ॥ सूख गये रसना धर मंजुल कंज से लोचन चारु चुवै ॥
करुणा निधि कंत तुरंत कह्यौ कित दूरि महा बन भूरि जो चै ॥ सरसी
रुह लोचन नीरहि देखि चितै रघुनायक सीय सिषै ॥ अबही बन
भामिन बूझत ही तजि कौसल राजपुरी दिन द्वै २४ ॥ दूसव ॥ जल
कौ गये लछि मन है लरिका परषो पिय छांय घरी कहै ठाढे ॥ पूछि
पसेव बयारि करौं और पाय पषारिहौं भू भरि डाढे ॥ तुलसी रघु
वीर प्रिया श्रम जानि कै बैठि बिलम्ब लौं कंटक काढे ॥ जानकी
नाह कौ नेह लख्यौ पुलको तन वारि विलोचन बाढे ॥ २५ ॥ सुम
ला ॥ ठाढे हैं द्रुम डारि गहैं धनु कांध धरे कर सायक लै ॥ विकटै
भ्रकुटी बडरी अखियां अनमोल कपोलन की छबि है ॥ तुलसी
अैसी मूरति आनि हिये जड़ डारि धौं प्रान निछावर कै ॥ मनसी क
र सांवरी देह लसी मनु रासि महा तम तारिक मै ॥ २६ ॥ मन ह
रन ॥ जलज नयन जल जानन जटा है सिर जोबन उमगअं
ग उदित उदार है ॥ सांवरे गोरे के बीच भामनी सुदामिनी सी मुनि
पट धीरे उर फूलन के हार है ॥ करन सरासर सिली मुख निषं
ग कटि अतिही अनूप काहू भूपके कुमार हैं ॥ तुलसी

विलोकि कै तिलोकि के तिलक तीन निरखि नर नारि ज्यौं चिते रे चित्रसार है ॥ ३७ ॥ आगे सोहै सांवरो कुमर गोरो पाछे आछे मुनिवेष धरे लखि लाजत अनंग है ॥ वान विसिषासन वसन बनही के कटि कसे हैं बनाय नीके राजत निखंग है ॥ साथ निसि नाथ मुखी पाथ नाथ नंदिनी सी तुलसी विलोके चित लाय लेत संग है ॥ आनद उमंग मन जोवन उमंग तन रूप की उमंग उमंगत अंग अंग है ॥ ३८ ॥ सुंदर बदन सरसीरुह सुहाये नैन मंजुल प्रसून माथे मुकुट जटानि के ॥ अंस निसरासन लसत सुचि सर कर तून कटि मुनि पट लटक पठान के नारि सुकुमारि संग जाके अंग उबटि कै विचि वरूथ विधि विधु ति छटानि के ॥ गोरे को वरन देखे सोनो न सलोने लागे सांवरो विलोके गर्व घटत घटानके ॥ ३९ ॥ बलकल वसन धनु बान नून कटि रूप के निधान घन दामिनि वरन है ॥ तुलसी सो तिय संग सहज सुहाये अंग नवल कवल हूते कोमल चरन है वारो सो बसंत वारो रति पति रूप वंत सर मुनि थकि रहे रूप के हरन है ॥ तापस वेष बनाये पथिक पथ में सुहाये चले लोक लोचननि सफल करत है ॥ ४० ॥ दुमिल ॥ बनिता वन स्यामल गौरि के बीच विलोकहु री सखी मोहि सी है मग जोगन को मल क्यों चलि है सकुचाति मही पर पंकज द्वै ॥ तुलसी सुनि ग्रामवधू तिय को पुल के तन औ चले लोच न च्वे ॥ सब भांति मनो हर मोहन रूप अनूप है भूप के बालक द्वै ॥ ४१ ॥ इंदव ॥ सांवरे गोर सलोने सुभाय मनोहर ताहि रमै न लियो है ॥ बानक मान निषंग कसे सिर सोह जटा मुनि बेष कियो है ॥ संग लिये तिय चंद्रमुखी रति को जिहि रंचक रूप दियो है ॥ पाइन सों पनहीं न पियादेह क्यों चलि है सकुचात हियो है ॥ ४२ ॥ रानी मैं जानी अमानी महा पवि पाहन हूं ते कठोर हियो है ॥ ऐसी मनोहर मूरत ए बिछुरें कैसे प्रीतम लोग जियो है ॥ आंखन मे सखी राखिवे जोग इन्हें किमि कै बन भूप दियो है ॥ तुलसी मन जानि सयान सो रजन कै उर अंतर बोस लियो है ॥ ४३ ॥ सीस जटा उर बाहु बिसाल

विलोचन लाल तिरछी सी भौं हैं ॥ तून सरासन बान धरें तुलसी
बन मारग में अति सोहैं ॥ सादर बारहि बार सुभाइ चितै तुमत्यौं
हमरो मन मोहैं ॥ बूझत ग्रामवधू सिय सूं कहौ सांवरे सो सखी
रावरे को हैं ॥ ५४ ॥ दीन के दान दिवाकर वारिधि सील सुधा बसु
धा उजियारे ॥ संत की संपति भूपन की मति मात पिता गृह
प्राण अधारे ॥ कौन मिटै विधि की लिखनी पितु आयसु तैं व
न कौं पगु धारे ॥ गोरे सुगाभ लला मम देवर सांवरे सो पति प्रा
न हमारे ॥ ५५ ॥ दुमला ॥ सुनि सुन्दर बैन सुधा रस साने सया
नी हौ जानकी जान भली ॥ तिरछे करि नैन दै सैन तिन्हैं समझा
य कछू मुसकाय चली ॥ तुलसी तिहि औसर सोहैं सबै अवलोक
त लोचन लाहु अली ॥ अनुराग तड़ाग में भानु उदै विकसी जन
मंजुल कुंद कली ॥ ५६ ॥ धरि धीर कहैं चलि देषिये जाय जहां
सजनी रजनी रहिये ॥ कहिये जग सोच कछू फल लोचन आपन
तो लहिये ॥ सुख पाय हैं कान सुने बतियां कल आपस में जो कछू
कहिये ॥ तुलसी अति प्रेम लगी पलकै पुलकी लखि राम हिये
महि है ॥ ५७ ॥ पद कोमल सामर गौर कलेवर राजत कोटि
मनोज लजाये ॥ कर बान सरासर सीस जटा सरसी रुह लो
चन सोन सुहाये ॥ जिन देषि सखी सनि भावइते तुलसी तिनसी
मन फेरि न पाये ॥ इहि मारग आजु वे राज किशोर बधू मृग
नैनि समेत सिधाये ॥ ५८ ॥ झूलना ॥ मुष पंकज कंज विलोचन
मंजु मनोज सरासन सी बनी भौ हैं ॥ कमनी प कलेवर काम
ल स्यामल गौर किशोर जटा सिर सोहैं ॥ तुलसी कटि तून धरे
धनु बान अचानक दृष्टि परी सिर छांहैं ॥ लहौं किहि कौं तोहि सों
सजनी मृदु मूरति हैं निरखी मन मोहैं ॥ ५९ ॥ इति श्रीकवि
त रामायणे अयोध्या काण्ड सम्पूर्णम् ॥ २ ॥

अथ आरण्य काण्ड लिख्यते

दंडक ॥ प्रेम सो पीछे तिरीछे प्रियाहि चितै चितदै चले लै चित चो
रै ॥ लोचन लोल चलै भृकुटी कल कामकमान सी भौं तन तोरैं

स्याम शरीर पसेव लसै झलसै तुलसी छवि सो मन मोरै ॥ राजत राम कुरंग के संग निषंग कसे धनुसों सर जोरै ॥ ५० ॥ दुमिल ॥ सर चारि क चारु बनाय कसे कटि पान सरासन सायक लै बन खेलत राम फिरै मृगया तुलसी छवि सो बरनै किमि कै ॥ अ व लोकि अलौकिक रूप मृगी मृग चौंकि चकै चितवै चित दै ॥ नडिगै न भगै जियजानि सिली मुख पंच धरै रति नायक है ॥ गौ तम तिय रीति ॥ ५१ ॥ बिमध्य के वासी उदासी तपी व्रत धारि मह बिन नारि दुखारे ॥ गौतम तिय तरी तुलसी सो कथा सुनि भे मु नि बृंद सुखारे ॥ ह्वै है सिला सब चन्द्र मुखी परसे पद मंजुल कंज तिहारे ॥ कीनी भली रघु नायक जू करुणा करि कानन कौं पगु धारे ॥ कीनी भली ॥ ५२ ॥ पंचवटी वर पर्ण कुटी तर बैठे हैं राम सुभाय सुहाये ॥ सोहै प्रिया प्रिय बंधु लसै तुलसी सब अंग मनो छवि छाये ॥ देषि मृगी मृग नैनी कहे प्रिय बैनत प्रीतम के मन भाये ॥ हेम कुरंग के संग सरासन धायक लै रघुनाथ कधाये ॥ ५३ ॥ मारि कुरंग सुधाम दियो तब रावन सिंदन लै सिय धाये ॥ जुद्ध जटा जु बहुरि परे प्रभु तात की भांति सरूप हि पाये ॥ वालि वधो कपिराज दियो हनुमंत हि जानि सब दास पठाये ॥ जानकी षोजि सरोज मुखी जहां भेटि हैं यौं रघुबात सुन ये ५४ ॥ इति श्री कवित्त रामायणे आरण्य काण्ड संपूर्णम् ३ ॥

अथ किष्किन्दा काण्ड लिख्यते

मनहरन ॥ षोजन वहोरि जामवन्त आदि कपि चले चन्द्र प्रभा देषि गमवद्रि का को सो गई ॥ सिन्धु तट लखे महावीर विनु पक्ष रहै अपने भवरि चले सोभा बढ़नै गई ॥ तुलसी कहत गुन जटा वधू करनी सोज मैं पक्ष जस राम कृपा दृष्टि सो भई ॥ नाम के प्रताप जस बल गुन सूर लगि कहै रिच्छपति लषि आवो मात कौ जई ॥ ५५ ॥ जब अंग शरिर की मति गति भर भरी पवन के पूत कौन कूदि वे कौ वल गो ॥ साह सी है सैल पर सहसा ही कै लिपाई चितवत चहूं ओर औरनि को ॥

कलगो ॥ तुलसी रसातल को सलिल निकसि आयो कोल कल मल्यो अहि कमठ हू को वलगो ॥ चारहू चरन के चपेट चापे चिपटी गो ऊँचक ऊँचकि चारि आंगल अबुलगो ॥ ५६

॥ इतिश्री कवित्त रामायणे किष्किंदा काण्ड सम्पूर्णम् ॥ ५ ॥

अथ सुन्दर काण्ड लिख्यते ॥

मनहरन ॥ वासव वरुन विधि बनतें सुहावनी दसानन को कानन वसंत कौं सिंगारसो ॥ समय पुराने पात परत डरत वात वालसल वाल रति मार को विहार सो ॥ देखे वर वापिका तड़ाग वाग कौ बनाव राम वस भो विरागी पवन कुमार सो ॥ सीय की दशा विलोकि विटप असोक तर तुलसी विलोक्यौ सो तिलोक मो कसार सो ॥ ५७ ॥ माली मेघ माल वन पाल विकराल भट नीके सव काल सींचै सुधारनीर कैं ॥ मेघनादतें दुलारो प्राणते पियारो वाग अति अनराग जिय जाल धानुधीर कैं ॥ तुलसी जो जानि सुनि सीय को दरस पाय पैठौ वाटिका वजाय वल रघुवीर की ॥ विद्यमान देखत दसानन को कानन सौ तहस नहस कियो साहसीस मार को ॥ ५८ ॥ वसन वटोरि वोरि तेल चमीचर घोंघि धाय आये वांध तल गूरहैं । तैसो कपि कौतिकी डगत हे ले गतिक कै लात के अघात सह जीमें कहै कूर हैं ॥ वालकिलकारी कै कै तारी दे दे गारी देत पाछे लागत वाजे निसान ढोल तूर हैं ॥ वालधी वढन लागि ठौर ठौर दीन्ही आगि विधि की दवारी कैधौं कोटि सत सूर हैं ॥ ५९ ॥ लाई लाई आगि भागे वाल जाल जहां तहां लगहैं निबुकि गिरि मेरु तें विसाल भो ॥ कौतुकी कपीस कूदि कनक कगूरा चढ़्यौ रावन भवन चढि ठाढो तिह काल भो ॥ तेज की निधान मानो कोटिक कृसानु भानु नख विकराल मुख तैं सो रिस लाल भो ॥ तुलसी विराजै ज्यौं बालधि पसारि भारी देखे ह ह रत भट काल तें कराल भो ॥ ६० ॥ वालधी विलम्ब विकराल ज्वाल जाल मानो लंक लंबे को काल रसना पसारी है ॥ कैधौं व्योम विधि का भरे हैं भूरि धूम केतु वीर

रस वार तर वरिसी उचारी है ॥ तुलसी सुरेस चापकैधौंदामि नी कलाप कैधौ चली मेरु तै कसारि भारी है ॥ देखै जातुधान जातु धानी अकुलानी कहै कानन उजार्‍यो अब नारी प्रजारी है ॥ ९१॥ जहां तहां ववकि विलोकि वंबुकारी देत जरत निकेत धावौ धावौ लागी आगि है ॥ कहां तात कहां भ्रात मात भागिनी सभामिनी छोटे छोटे छोहरा अभागे भौंडे भा गिरे ॥ हाथी छोरो घोरा छोरो महिष वृषभ छोरो सोवै सो ज गावो उठि उठि जागि जागरे ॥ तुलसी विलोकि अकुलानी कहै जातुधानी वार वार कह्यो पियकपिसौं न लागिरे ॥ ९२॥ देखे जु ज्वाला जाल हा हा कार दशा कंध सुन्यों कहो धरौ धरा बीर बलवान है ॥ लिये सूल सेल पासि परिघ प्रचं ड दंड भाजन सनीर धीर धरे धनुबान हैं ॥ वासौ लगूर ब ल मूल प्रति कूल हवि स्वाहा महा हांकि हांकि होता हनु मानहै ॥ तु लसी समिध सौंज जन्त्र कुंडल कलषि जातु धातु पुंग फल जवति ल धान है ॥ ९३॥ गाज्यो कपि गाज ज्यौं विराज्यो ज्वाल जाल जु त भाजे धरि वीर अकुलाय उठो रावनो धावौ धावौ धरौ धाय पनि जातु धातु धरि वारि धाये उलस्यो जलद जनु सावनो ॥ लपट रूपट रुहराने रहराने वात भहराने भट भयो प्रवल परावनो ॥ ढकनि ढकेलि येलि सचिवचिलै लैठेलि नाथन चले गौ वल अनल भयावनो ॥ ९४॥ बड़ी विकराल वेषु देषि सुनि सिंघ नाद मेघनाद कहैं सविषाद कह रावनो ॥ वेग जीतो मारुत प्रताप मार तंड कोटि कालहू कराल ता बड़ाई जीतो बावनों तुलसी स्याने जात धान पछि ताय कहैं जाकौ ऐसो दूत सोतो साहिब है आवनी ॥ काहू को कुशल राखै राम वाम देव हू को विषम बली सो वादि बैर को बढावनो ॥ ९५॥ पानी पानी पानी सब रानी अकुलानी कहै जाति है परानी गति जानी जग चालिहै ॥ वमन विसा रै मनिभूषनि सम्हारे नाहि आनन सुखाने कहैं केहू को

उपालि है ॥ तुलसी मन्दोवै मीजि हाथ धुनि माथ कहै काहू का
म कीयो न मैं काहू के तौ काल है ॥ बापुरे विभीषण पुकारि बार बार
है कह्यौ बानर बड़ी बलाय घने घर घालि है ॥ ६६ ॥ कानन उजा
स्यौ तौ उजास्यौ न विगास्यौ कछू बानर विचारो बांधि आन्यो हीठि हा
रसौं ॥ निपट निडर देषि काहू न लख्यौ विसेषि दीनी नकटी लाय क
हि कुल के कुठार सौं ॥ छोटे न बडे मेरे पूत ये अनेरे सब सांपनि सौं खे
लै गरै मद्य छुरा धार सौं ॥ तुलसी मदोवै रोवै रोय कै विगोवै आप बार ब
ह्यौ मैं पुकार डाढी जार सो ६७ रानी अकुलानी सब डाढत परानी ज
हि सकैन विलोकि वेष केसरी कुमार को ॥ मीजि २ हाथ धुनि माथ दश
माथ तिय तुलसी तिलोकन भयो बाहिर अगार को ॥ सब असबाब डा
ढै नै न काढै मैं न काढै जिय की परी संभार सहन भंडार को ॥ षीझत
मदोवै सविषाद मेघनाद देखि वयो लुनिन सब आई डाढी जार
को ६८ रावन की रानी जातधानी विलषानी कहै हाहा कोउ कहै बीस
बाहु दश माथ सौं ॥ काहे अति काय काहे काहे रे अकंपन अभा
गे तिय त्यागे भौंडे भागे जात साथ सौं ॥ तुलसी बढाई बादि सा
ल तैं विसाल बाहै याही बल बालिसो विरोध रघुनाथ सौं ॥ काहे मे
घनाद काहे काहे रे महोदर तू धीरज न देत लाय लेत क्यौं न हा
थ सौं ॥ ६९ ॥ हाट बाट कोट ओट अटन अगार पौरि षोरि २ दौरि
दौरि दीन्ही अति आगि है ॥ आरत पुकारत संभारत न कोउ काहू
व्याकुल जहां सो तहां चले लोग भागि हैं ॥ बालधि फिरावै बार बार
झहरावै झरैं बूंदिया सी लंक पिघलाय पागि पागि है ॥ तुलसी विलोकि
अकुलानी जातुधानी कहैं चित्रहू के कपि सौं निसाचर लागि हैं ॥
७० ॥ लागि लागि आगि भागि भागि चले जहां तहां धाय कौन
माय बाप पूत न संभार हीं ॥ छूटे बार बासन उघारे माय धूम अंध
कहै बारे बूढे बारि बारि बार बार हीं ॥ हय हिहिनात भागे जात हम
गत गज भारी भीर ठेलि पेलि रौंद बूंद डारहीं ॥ नाम ले बुलात बि
ल लात अकुलात अति तात तातै तौ ते तेरे जियत मौसि मारहीं ॥ ७१
लपट कराल ज्वाल जाल माल दह दिसि धूम अकुलान पहिचानै

कौन काहिरे पांनी कौ ललात विललात जरे जात गात परे पाय
माली जात भ्रात तू निवाहिरे ॥ प्रिया तू पराहि नाथ नाथ तू परा
हि बाप बाप तू पराहि पूत पूत तू पराहि रे ॥ तुलसी विलोकि लो
क ब्याकुल विहाल कहै लेहि दससीस अब वीस चष चाहिरे ७४
वीथका बजार प्रति अटन अगार प्रति पवर पगार प्रति वानर
विलोकिये ॥ अध ऊर्ध वानर विदिसि दिसि वानर है मानो रहे है
भरि वानर तिलोकिये ॥ मूंदे आंखि हिय में उघारे आंखि आगे
ठाढ़े धाय जाय जहां तहां और कोउ कोपिये ॥ लेहु अब लेहु
तब कोऊ न सिखायो मानें सोई सतरात जात ताहि जाहि रोकि
ये ॥ ७५ ॥ एक करै धौं जाय के कहैं काढो सौंज एक औंज पानी
पीकै वन तन आवनों ॥ एक परे गाढ़े एक डाढे तेही काढ एक दे
षत हैं ठाढे कहैं पावक भयावनों ॥ तुलसी कहत एक नीकै ल
ये हाथ कपि अजहूं न छाडै बाल गाल को बजावनो ॥ धावो रे
बुझावो रे बचावो रे हौं रावरे जू आरे आगि लागनि बुझावे सिंधु वादनें
७५ कांपि दस कंध तव प्रलय पियाधि बोले रावन रजाय पाय आ
जू य जोरिकै ॥ कह्यो लंकपति लंक वरत बुझावो वेगि वानर वहा
य मारो महा बारि बोरिकै ॥ भले नाथ नाथ माथ वले पाय ना
थ मत वर्से मूसला धार वार वार धारि कै ॥ जीवन तें जागी आ
गि चपर चौगुनी लागी तुलसी भभरि मेघ भागे मुष मोरिकै
७६ उहा ज्वाल जरे जात ह्यां गलानि गरे गात सबे सुकचात स
व कहत पुकारि हैं ॥ जुगषट भानु देवे प्रवल कसानु पेषे सेसमु
ख अनल विलोके वार २ हैं ॥ तुलसी सन्यो न कान सलिल स
र्पी समान अति अचरज कियो केसरी कुमार हैं ॥ वारिद वचन
सुनि धुने सीस सचिवन कहैं दससीस ईस वामता वि कार है ७७
पावक पवन पांनी भानु हिभवान जम काल लोक पाल मेरे ड
र डमा डोल दे ॥ साहिव महेस सदा संकित रमेस मेरि महा तप
सार से विरंचि लिये मोल है ॥ तुलसी तिलोक आज दूजो न
विराजे राज राजनि के वेरी वेरा लीने में अमोल हैं ॥ कौरे ईस ना

म काम वाम होत मोह मन माल वान रावरे से वावरे से बोल है ॥७७॥ भूमि भूमि पाल व्याल पाल कपताल नाक पाल लोकपाल जेते सुभट समाज है ॥ कहै मालवान जातुधान पति रावन को मनुज अकार आने ऐसो कौन आज है ॥ राम कोह पावक समीर सीय सोइ स्वास ईस वामता विलोकि बानर को व्याज है ॥ जार त भचार फेर फेर सो निसंकलंक जहाँ वाको वीर जे सो सूरसिर सिरताज है ॥७८॥ पान पकवान विधि नाना कोस धानौ सिंधि विविधि विधान धान जरत बुषार हीं ॥ कनक किरीट कोटि पलंग पिटारे पीढा काढत कहार अब जरे बेर भारहीं ॥ प्रलय पावक वाढ्यौ जहां डस्यौ तहां जार्यौ रूपट लपट भरे भवन भंडार हीं ॥ तुलसी अगारन पगारन बजार बाढ्यो हाथ हथसार जरे घोरा घुरसारहीं ॥७९॥ हाट वाट हाटक पिघिलि चल्यौ घीसो घर्यो कनक कराही लंक तल फत तापसो ॥ नाना पकवान वलवान जात धान सब पगि २ देरि किये भली भांति भालिसो ॥ पाहनी कृसानु पकमानु सो परोसो हनूमान मानि के जिवायो वित चायसौं ॥ तुलसी निहारि अरि नारि दै दै गारि कहै वावरे तैं हि वैरि कीन्हों राम राय सौं ॥८०॥ रावन सो राज रोग वाढत विराट उर दिन दिन विकल सकल रंकसो ॥ नाना उपचार करि हारे सुर सिद्ध मुनि होत न विसोकि औत पावे नाम नांके सो ॥ राम करि जाय तेई सायत समीर सुनु उतरे पयोधि पार साधि सर वांकसो ॥ जतुधान वूटी पुट पाक लंक जात रूप जतन विचारि जारि कियो है मृगांक सो ॥८१॥ जारि वार कै विधूम वारिधि वुमाय लूं मनाय माथ पगनि भौ ठाढो कर जोरि कै ॥ मात कृपा कीजे महदानी दीजे सुनि सिय दीनी है असीस चारु चूडामन छोरि कै ॥ कहा कहो तात देखे जात जे विहात दिन बड़ी अब लंबही सुचले तुम तोरि कै ॥ तुलसी समीर नैन नीर सों सियल वैन विकल विलोकि कपि कहव निहोरि कै ॥८२॥ दिवस छ:सात जात जान जैन मातु धरि धीर अरि अंतकी अवधि

रही योरिकै ॥ बरिध बधाय सेतु अहैं भानु कुल केतु सानुज सकल कपिकटक बटोरि कै बचन विनीति कहि सीता को प्रबोधिकरि तुलसी त्रिकूटचढि कहत डफोरि कै ॥ जयजयजानकी मजै कपीश इप घोस करि कै सरी कपीस कू भोज इधिह लोरि कै ८३॥ साहसी समीर सूनु निधि नीर लांघि लषि लंक सिद्धिपीठ निसि जाग्यौ है समानसौ ॥ तुलसी विलोकि महा साहास प्रसन्न भई देवी सिय साखी दियो है वरदानसौ ॥ वाटिका उजारि अक्ष धारि मारि मारि जारि गढ भानुकुल भानुको प्रतापभानिभातुसौ ॥ करल विसोक लोक कोकनर कोक कपि कहै जांमवंत आयौ आयो हनुमानसो ॥८४॥ गगन निहारि किलकारी भारी सुनि हनुमान नहि वानिभये सानंद सचेत है ॥ वूडत जिहाज वाच्यौ पथिक समाज मानो आज आये जानि सव अंकमाले देतहैं ॥ जै जै तुलसी सचे जे लषन कपीस कहि कूदे कपि कौतु कीनद तेरे तेरे हैं ॥ अंगद मयंद नल नील बलसी महा वालधिफिरावै सुख नाना गति लेत हैं ॥८५॥ आयो हनुमान प्रान हातु अंकमाला देत लेत पग धूरि एक चूमत लगूल हैं ॥ एक बूझै वारवार सीय समाचार कहौ पवनकुमार भौ विगति स्रम सूल है ॥ एक भषे जानि आगें आनि कंद मूल फल एक पूजे वाहु वाल मूल तोरि फूल हैं ॥ एक कहैं तुलसी सकल सिद्धि ताकै जाके कृपानाथ नाथ सीतानाथ सानुकूल हैं ॥ ८६ ॥ सीय के सनेह सील कथा तथा लंक की कहत चले जांय सो सिराने पंथ छिन में ॥ कहौ जुवराज बोलि वानर समाज आज षाहु फल सुनि पेलि पैठे मधुबन मैं ॥ मारे बाग वान ते पुकारत दिवान गेठ जारे बाग अंगद दिषाये घाव तनमैं ॥ कके है कपि राज करि काज आये कीस सब तुलसीस कीस पषमहा मोद मेरे मन मैं ॥ ८७ ॥ नगर कुबेर को सुमेर की बराबरी विरंचि बुद्धि को विलास लंक निरमान भौ ऐसही बडाई सीस बीस बाहु बीर तहां रावन सो राजा राज तेज निधा

न भौ को ॥ तुलसी तिलोक की समृद्धि सांज संपदा के लि नापि राषी जैसे जाहर जहान भौ ॥ तसेर उपस बन वास सिंधु पास सो समाज महा राज जू के एक दिन दान भौ ॥ १८ बडे बिकराल भालु बानर बिसाल तरु तुलसी बंड पहाड ले पयोधि तोपि हैं ॥ प्रबल प्रचंड वर बंड बाहु दंड षंड षंडे मंड मेदिनी की मंडलीक लोपि हैं ॥ लंका दाह देषे न उछा हर रह्यो काहू को कहे सब सचिव पुकारि पांव रोके हैं ॥ वाचिहै न पाछे नें पुरारि मुख चारि हू के को हेरन रारि को जो कौंसलेस कोपि हैं ॥ १९ ॥ त्रिजटा कहत वार वार तुलसी सरिस राघो बान एक ही समुंद्र सारो सोकि है ॥ सकुल संघारि जातु धान धारि जंबु कादि जोगिनी जमाति कालिका कलाप तोपि हैं ॥ राजा दैन वाजि वो वजाय के वभीषन को वाजे व्योम वाजने बिवुध प्रेम पोषि है ॥ कौन दश कंध कौन मेघ नाद वापुरो को कुंभ करण कीट जव राम रन रोकि हैं ॥ ९० बिनै सनेह सों कहत सीय त्रिजटा सों पाय कछू समाचार आरज सुबेन के ॥ पाये जू बधाये सिंधु उतरो कटक कुल आये देख दूत बड दारुण दुखन के ॥ बदन मलीन बल हीन दीन देषि मानों मिटे घटे तमी चरति त्रिभुवन के ॥ लोक पति शोक को क मूंदे कपि काकन्द दंड है रहे हैं रघु आदि नउ ऋन के ॥ ९१ ॥ झूलना ॥ सुभुज मारीच षर त्रिसिर दूषन बली दल तर्जेहि दूसरो सरन सांधो ॥ आनि पर भाम विधि बाम तेहि राम सों सहित संग्राम दश कंध कांध्यो ॥ समुझि तुल सीस कपि कर्म घरि बिकल सुनि अनि इं लोक पाथो धि वाध्यो ॥ वसत गढ़ बंक लंकेस नायक अछत लंक नहि षात को उ भात राष्यो ॥ ९२ ॥ छंद ॥ विप्र जई भृगु नायक से बिनु मान भये हनि हाथ हजारी ॥ वातुल मातुल कीन सुनी सिष वातुल सो कपि लेकाते जारी ॥ होन भलो रघु राज मिलै पर बूझिये सो को जग कौन गवारी ॥ कारति बडी करतूति वडी जनुवात बडी सो वडो दिनजारी ॥ ९३ ॥ द्रुमिल ॥ जरपाइन

भै वन वाहन से उतरे बादर जे राम रटैं ॥ तुलसी लिये सैल सिला सब सोहन सागर ज्यों बल वारि बढ़ै ॥ करि कोप करै रघुवीर को आपसु कौतिक कही गढ़ कूदि चढ़ै ॥ चतुरंग चमू पल में दलि कें रन रावन राँड के हाड गढ़ै ॥ ९५ ॥ मनहरन ॥ विपुल विसाल विकराल कपिभालु मानौं काल बहु भेष धरे धायो कर करषा ॥ लिये मिला सैल साल ताल औ तमाल तोरि तोपै तोय निध सुर को समाज हरषा ॥ डिगे दिग कुंजर कमठ कोल कलमलै डोले धराधारी धर धरा धर धरषा ॥ तुलसी तमकि चले राघो कीस पथ करै अटक कटक कपि मरषा ॥ ९ ॥ इति श्री सुन्दर काण्ड समाप्तः ॥ ५ ॥

अथ लङ्का काण्ड लिख्यते ॥

आये शुक सारन बुलाये ते कहन लागे पुलक सरीर सेना करतफल मही ॥ महा वली बानर विसाल भालु काल जैसे अति ही कराल मुष हेरि वह मही ॥ हंसो दशमाथ रघुनाथ को प्रताप सुने तुलसी दुरावे मुष सूषत मह मही ॥ राम को विरोध बुरो विधि हरि हर को सब को भलो है राजा राम के रह मही ॥ ९६ ॥ अंगद प्रसंग ॥ आयो आमो देषो सोई वानर बहोरि भयो शोर चहूं ओर लंक आये जुव राज के ॥ एक काढ़ै सौंज एक करै धौंज कहा ह्वई है पोच भई महा सोच सुभट समाज के ॥ गाजो कपि राज महाराज कीस पथ करि मूंदे कांन जातु धान मानो गाजे गाज के ॥ सहमि सुभात बाते जात की सुरति करि लवा जौं लुकात तुलसी रुपैटैं वाज के ॥ ९७ ॥ तुलसी सवल रघुबीर जू के वाल सुत ताहि न गनत बात कहत करेसी ॥ वकसीस ईस जी की षीस होत देषियं कहे बुरो लागे बात कहत हो तरोसी ॥ अवही कुसल-क छू भयो न अकाज तेरो राम की सरन गये काल सतफेरीसी ॥ सुनि दशमाथ नाथ साथ के हमारे कपि हाथ लंका लायहै तो न रहेगी हथेरीसी ॥ नन चंद भट गढ़ कोटि के कंगूरे

को पिने क्रुद्द काढे हैं ढेढा ढालन की देरीसी ॥ ९८॥ दूषन विराध खर त्रिसिरा कबंध बंधे तालउ विसाल वेधे कौतुक है कालिकौ एकही विवस बस भयो वीर बांकुरो सो तू हू है विदित बलमहा वली वाल कौ ॥ तुलसी कहत हित मान तन नेक सक मेरो कहा जै है फल पैहै तू कुचालि को ॥ बीर करके सरी कुठार पानि मानि हारि तेरी कहा चली वढो तोसो गनै घालि को ॥ ९९ ॥ छंद्व ॥ तोसों कहो दस कंधरें रघुनाथ विरोधन की जिये बौरे ॥ वालि वलीषर दूषन श्रोर अनेक गिरे जे अकास मैं दौरे ॥ ऐसीय हाल भई तोहि कौन तुलै मिलि सीय चाहि सख जोरे ॥ राम के रोषन राषि सकै तुलसी विधि श्री पति शंकर सौरे ॥ १०० ॥ तू रज निश्चर नाय महा रघुबीर के सेवक को जन हौं हौं ॥ बलवान है स्वान गली अपनी तोहि लाज न गाल बजावत सो हौं ॥ बीस भुजा दस शीस हरो न डरो प्रभु आयसु भंगते सो हौं ॥ खेत में केहरि ज्यों गजराज दलो दल बाल कौ बालक तो हौं ॥ १०१ ॥ कौसल राज के काज हौं करि हौं त्रिकूट उपारि लै वरिध बोरौं ॥ लै भुजदंड है अंड कटाह चपेट के चोट चटाक दे फोरौं ॥ आयसु भंगते जोन डरौं सब मींजि सभा सद श्रोनित चोरौं ॥ बालि को बालक तौ तुलसी दसहू मुख के रन में रद तोरौं ॥ १०२ ॥ दुमिल ॥ अति कोप सो रोयो हौं पांव सभा सब लंक ससंकित सोर मचा ॥ तमके घन नाद से वीर प्रचारि के हारि निसाचर सैन बचा ॥ नटरै पग मेरु हलै गरु भो सु मनो महि संग विरंचि रचा ॥ तुलसी सब सूर सराहत हैं जगमें बलसालि है बालि बचा ॥ १०३ ॥ मनहरन ॥ रोपो पांव पैज कै प्रचारि रघुबीर बल लागे भट सि मिटिन नै कुट सकतु है ॥ तजि वार धरना धरा धर धसकत धरा धर धार भार सहित सकतु है ॥ कहा वली बालि को दलत दल कित भूमि तुलसी उछलि सिन्धु मेरु मसकतु है ॥ कमठ कठिन पीठि घटा परो मंदिर के

सोई आयो काज पै करेजे कसकतु है ॥१०४॥ झुलना मंदोवरी प्रसंग ॥ कनक गिरि श्रृंगचढि देखि मर्कट करक बदतिमंदो दरी परम भीता ॥ सहस भुज मत्त गजराज नर केतकी परसु धर गर्व जेहि देखिबीता ॥ दास तुलसी सबल समर कौसल धनी ख्यालही वालि बलि सालि जीता ॥ रे कन्तत्रन दन्त ग हि सरन श्रीरामकी चलहु यहि भांति ले सौंपि सीता ॥१०५॥ नीच मारीच बिचलाय लिय ताडि़का भंजि सिव चाप सुख स बहि दीन्हों ॥ सहम दशचारि षल सहित षर दूष नहि पठै जम धाम तें तवन चीन्हों ॥ मैं जु कहि कंथ सुन अन्त भग वन्त सौं बिमुष होय वालि फल कौन लीन्हों ॥ वीस भुज- सीस दश षीस गये तवहि जब ईस के ईस सौं वैरि कीन्हों ॥ वालि दल्यौ कालि जल जानि पाषान किये कन्त भगवन्त तें तौन चीन्हों ॥ बिपुल बिकराल भट भालु कपिकालु से संग तरु तुंग गिरि श्रृंग लीन्हों ॥ आय गयो कौंसलाधी स तुलसी सजिहि छत्र मिसि मौलि दश दूरि कीन्हों ॥ ईस वकसीस जनि षीस करु ईस सुनि आजहूं कुल कुसल बैरे हि दीन्हों ॥१०७॥ जाके सैन समूह कपि को गने अम्बुतह महा बल बीर हनुमान जानी ॥ भूलि हैं दश दिशा षीस सु नि डोलि हैं कोपि रघुनाथ जब बान हानी ॥ वालिहू गर्व- जिय माहि ऐसो कियो मारि दह वट कियो जमकि घानी ॥ कहत मन्दोदरी सुनहु रावन मतो वेगि ले देहि वैदेहि रानी ॥१०८॥ गहन उजारि पुर जारि सुत मारि तव कुसल गयो कीस वर वीर जाको ॥ दूसरो दूत मन रोपि कीष्यो सभा ब षे यिक सर्व को गर्व थाको ॥ दास तुलसी सभै बद दूत मैं नंदिली मंद मत सत्य सुनि राम साका ॥ तौ लौं मिलि वेगि जौ लौं नरन रोष भयो दासरथी बीर बिरदैत बांको ॥१०९॥ मनहरन ॥ कानन उजारि अक्ष मारि धारि धूरि कीन्हों न गर प्रजारो सो विलोको बल कीस को ॥ तुम विद्यमान जा

तु धान मंडली में कपि कोपि रोप्यो पांव सो प्रभाव तुलसीस
को ॥ कन्त सुनि मन्त कुल अन्त कियो अंत हानि हार्यो कीजै
हिये तै भरोसो भुज बीस को ॥ तौ लौं मिलि जाय जौलों चाप
ना चढायो राम रोष वान काढो न दलैया दस सीस को ॥
११०॥ पवन को पूत देखो दूत बीर बांकुरो नो बंक गढ लंक
सोद काढि कलि दाहिगो ॥ बालि बलि शालि को सो कालि
दाप दालि कोपि रोपो पांव चपरि चमू को चाव चाहिगो ॥ सो
ई रघुनाथ कपि साथ पाथ नाथ बांधि आयो नाथ भागते
षिरिरि षेरि षाहि गो ॥ तुलसी जो गर्व तजि मिलवे को सा
ज सजि देहि सियन तु पिय षाई मालि जाय गो ॥ १११॥ उ
दधि अपार उतरत नाहि लागी वार केसरी कुमार सो अदंड
कै डाडि गो ॥ वाटिका उजारि अक्ष रक्षकनि मारि धारि भा
री भट रावरे के चावरे से काढि गो ॥ तुलसी तिहारे विद्यमा
न जु राज आजु कोपि पांव रोपि सवै कछु हाय छाडि गो ॥
कहे की न लाज पिय अजहूं न आये बाज सहित समाज
गढ रांड को सो भांडि गो ॥ ११२॥ जाको रोस दुसह त्रिदोष
दाह दूरि किये पै यतन षत्री षोज षोजत षलक में महिष
मतीको नाथ साहसीस हस बाहु समर समर्थ नाथ हेरिये ह
लक में ॥ सहित समाज महा राज सो जहाज राज बाडि गयो
जाके बल बारिधि छलक में ॥ टूटत पिनाक के मनाक वाम
राज सोते नाक बिनु भये भृगु नायक पलक में ॥ ११३॥ कीनी
छोनी छत्री बिन छौनि पछ पनिहार कठिन कुठार पान
बीर वान जानि कै ॥ परम कृपाल जो नृपाल लोक पाल
नि पै जव धनु हाई है है मनु अनुमान कै ॥ ता समैं पिनाक
मिस बामता बिलोकि राम रोके लोकपर लोक भारी भ्रम मा
कै नाथ दस माथ महि जोरि वीस हाथ पिय मिलिये पे नाथ रघु
नाथ पहिचानि कै ॥ ११५॥ कंस उ मात मातुल विभीषन हूं वार
वार अंचल पसारि पिय पाये लै लै हौं परी ॥ विदित विदे

ह धुर नाथ भृगुनाथ गनि संचय आस जानि जिय की हू
आनि गां परी ॥ वायस विराध षर दूषन कबंध वालि वैर र
घु वीर न काहू की परी ॥ कंत वीस लोचन बिलोकिये कुमति
फल ब्याल लंक लाई कपि रंक कीसी झोपरी ॥ १२५ ॥ इंदव ॥ राम
सों साम किये नित है हित कोमल काजन कीजिये ठाढे ॥ आय
नि सूझि कहा पिय बूझिये जूझवे जोगन बाहिर नाढे ॥ नाथ
सुनी भृगुनाथ कथा वलि वालि गये चलि बात के साढे ॥ भाइ
भवीषन जाय मिलो प्रभु आय सुने परे सागर काढे ॥ १२६ ॥ पाल
वे कूं कपि भालु चमू जम काल करालहू को पहरी है । लंक से
बंक महा गढ दुर्गम ढायवे दाहिवे को कहरी है ॥ तीतर तो
मन भीतर सैन समीर को सून बढो वहरी है ॥ राम प्रताप तेंपा
इलो बल एक लंगूल तुव सेन भरी है ॥ नाथ भलो रघुनाथ मिले
रजनीचर सेन हिये हहरी है ॥ १२७ ॥ मन हरन ॥ युद्ध प्रसंग
॥ ऐके रन रावन बुलाय वीर वानि पत जानि तजे रीत सब संयु
ग समाज की ॥ चली चतुरंग चमू चपरि हने निसान सेना सर
हन जोग राति चर राग की ॥ तुलसी विलोकि कपि भालु कि
ल कारी देत ज्यों कंगाल पाव बहु पातरी सुनाज की ॥ राम रुख
ति हरष्यो हिये हनुमान मानों षिल वग्र बोली सीस ताज
की ॥ १२८ ॥ सजि कै सनाह गज गाह उस छांह दल महा ब
ली धाये वीर जात धान धीर के ॥ इत भालु वानर विसाल मे
रू मन्दिर से लिये सैल सालि तो तरि निधि तीर के ॥ तुलसी त
मकि ताकी भिरे भारी युद्ध क्रुद्ध सेनि पसरा है निज निज भट
भीर के ॥ डंड ने रुंड रूमि रूमि झारि सेना चली समर सुमार
सर मारे रघुबीर के ॥ १२९ ॥ भरव ॥ तीषे तुरंग कुरंग सुरगति
साजि चढे छटि छैल छबीले ॥ भारी गुमान जिन्हे मन मे क
बहूत भये रन में तन्ढीले ॥ तुलसी लषि केहरि केहरि के
झपटे पटके २ सब सूर सलीले ॥ भूमि परे भट भूमि कंगह
त हांकि हरे हनुमान हठीले ॥ १३० ॥ सर सजो रत साज सु

बाजिसुमेल धरै बग मेल चले है ॥ भारी भुजा भरि भारी सरी
र बली बिजई सब भांति भले है ॥ तुलसी जिहि धाये रुकै धर
नी धरि धारि धरा धर कानि हले है ॥१२१॥ द्रुमिल्ला ॥ गहि मंदि
र हुं बंदर भालु चले सु मनो उमहे घन सावन से ॥ तुलसी उत झुं
ड प्रचंड रुके झपटे भट जे सुर दावन के बिरुझै निसरैत जे खेत
अरे नट रे हट वैर बढावन के ॥ रन मार मची उपरी उपरी अप
रा भले बीर रघुवर रावन के ॥१२२॥ सर तोमर सैल समूह
पवारत मारुत बीर निसाचर से ॥ इत तें तरु ताल तमाल
चले षर षंड प्रचंड मही धर के ॥ तुलसी करि केहरि नाद
भिरे भट षगा षगे षपु आषर के ॥ नष दंतनि सौं भुजदंड वि
हंडत मुंडित सुमूंड परे रुर के ॥१२३॥ रजनीचर मत्त गयं
द घटा बिगटै मृग राज के साज परे ॥ झपटे भट कोटि मही
पट कै गरजै रघुबीर की सौंह करे ॥ तुलसी उत हांक दसान
न देत अचेत भो बीर को धीर धरे ॥ बिरुझ्यो रन मारुत को वि
रुदैत जो कालहु काल सो बूझि परे ॥१२४॥ जे रजनीचर वीर बि
साल कराल विलोकत काल न षाये ॥ ते रन रोर कपीस किसोर
बडे वरजोर परे फल पाये ॥ लूम लपेटि अकास निहारि कै हां
कि हटी हनुमान चलाये ॥ सूषि गे गात चले नभ जात परे भ्र
म वातन भूतल आये ॥१२५॥ जौ दस सीस मही धर ईस को
बीस भुजा बुलि वेलि निहारौ ॥ लोक पति गाज दानव देव
सबै सह मैं मुनि साहस सारौ ॥ वीर बडो वर दैत यली अज
हू जग गावत जासु पवारो ॥ सो हनुमान हन्यो मुठिका गि
रि राज ज्यों गाज कौ मारौ ॥२६॥ दुर्गम दुर्ग पहार ते मारे प्र
चंड महा भुज दंड बने हैं ॥ लष्य मै पष्षन तिष्षनु तेज जे
सूर समा मैं गाज गने हैं ॥ ते विरदैत वली रन बाकुरे हांकि
हिये हनुमान हने हैं ॥ नाम लै राम दिवावत बंधुहि घूमत
घायल घाय हने हैं ॥१२७॥ धनोक्षरी ॥ हाथिन सौं हा
थी मारे घोरे सौं घोरे संघारे रथन सौं रथ विदरि बल

वानकी ॥ चंचल चपेट चेट चरन चकोट चाहैं हह रानी फौज
मह रानी जातु धान की ॥ वार वार सेवक सराहना करत राम
तुलसी सराहत रीति साहव सुजान की ॥ लामीं लूम लसत ल
पेटि पट कत भूमि देषो देषो लषन हनुमान की ॥ १२८ ॥
दवकि दवोरे एक वारिध में बोरे एक मगमें मही में एक
गगन उड़ात है ॥ पकरे पछारे कर चरन उपारे ॥ एक चारि
फारि डारे एक मींजि मारे लात हैं ॥ तुलसी लषन राम रावन
विविधि विधि चक्र पानि चंडी पति चंडि का सिहात है ॥ वडे
बडे वानर तरबीर बल बान वडे जातु धान मूयप निपातें
बात जात है ॥ १२९ ॥ प्रवल प्रचंड बलि बंड वाहु दंडवी
र धाये जातु धान हनुमान लियो घेरि के ॥ महा बल पुंज कं
जरारि ज्यौं गरजि भट जहां तहां पटके लंगूल फेरि फेरि
के ॥ मारे लात तोरे दांत भाजे जात हाहा षात कहे तुलसी
सराषि राम की सौं टेरि कै ॥ ठहरि ठहरि परे कहरि कह
उठे हहरि हहरि सिद्धि से हेरि हेरि के ॥ १३० ॥ जाकी बां
की बीरता सुनत सहमत सूर जाकी आंच अजहूं लसत लं
क लाहसी ॥ सोई हनुमान बल बान बाको बान रीत जौहै जा
तु धान सेना चले तथा हंसी ॥ कंपन अकंपन सुखाय अति
काय गये कुम्भ करन आदू रह्यो पाहि आहसी ॥ देषि गज रा
ज मृग राज ज्यों गरजि धायो धीर रघुवीर को समीर सुनु
साहसी ॥ १३१ ॥ झूलना मत्त भट मुकट दस कंठ साह सैल शृं
ग बिदर निजनु वज्र टांकी ॥ दशन धरि धरनि चिक्करत
दिग्गज कमठ सेस संकुचित संकित पिनाकी ॥ चलति महि
मेरु उछलति सागर सकल बिकल बिधि बिधिर दिसि विदि
सि झांकी ॥ रजनिचर घरनि घरि गर्भ अर्भक श्रवहि सुनत
हनुमान की हांक वांकी ॥ १३२ ॥ कौन की हांक पर चौंकि चंडी
स विधि चंड कर थकित फिर तुरंग हांके ॥ कौन के तेज
पर बल पील भट भीम से भीम तानि रषि करि नैन हांके

दास तुलसी जासु बिरद बरनत बेद बिदुष बिरदैत बर बैरि घाँ के॥ नाकनर लोक पताल कोउ कहत किन कहा हनुमान से वीर बांके १३३॥ जातु धाना वली मंत कुंजर घटा निरषि मृगराज जनु गिरत वृटो॥ बिकट चट चोट कर चरन गहि पटकि महि निघटि गये सुभव सत सब को छोटो॥ दास तुलसी परत धरनि धरकत धुकत हासी उठत जंबुकन लूटो॥ धीर रघुवीर के बीर रन बांकरे हांकि हनुमान कुलि कटक कूटो १३४॥ छप्पय॥ कबहुं बिटप भूधूर उपारि पर सैन वरष्पत॥ कबहुं वाजि सौं वाज मर्द्दि गज राज करष्पत॥ चरन चोट चटकनि चपेट अरि उर सिर बज्जत॥ विकट कटक वर दैत बीर वारिद जिम गज्जत॥ लंगूर लपेत पटकि महि जयत राम जै उच्चरत॥ तुलसी स पवन नंदन अटल जुद्ध क्रुद्ध कौतिक करत १३५॥ घनाक्षरी॥ अंग अंग दलित ललित फूले किंसुक सेहने भट लाषन लषन जातु धान के॥ मारि के पछारे हे उपारे भुजदंड षंड षंडि षंडि डारे ते बिदारे हनुमान के॥ कूदत कबंध के कबंध वंसी करत धावत दिषावत हैं लागें राघौ बान के॥ तुलसी महेस विधि लोक पाल देव गन देषत बिमान चढ़ें कौतुक मसान के॥ १३६॥ लोथिन ते ल्होहू के गवाह चले जहां तहां मानहु गिरिनि गेरि फिरना फेरत हैं॥ श्रोनित सरित घोर कुंजर करारे कूल कूलते समूल बाजे मानो बिटप परत हैं॥ सुभट सरीर नीर वारी मारी जहां तहां सूरनि उछाह कूर कादर डरत हैं॥ फिकरि फिकरि फेरु फेरु फारि पेट षात काक कंक बदुल कलाहल करत हैं॥ १३७॥ झोंझरी झपारी कांधे आंतन की सेली बांधे मुंड के कमंडल षप्पर किये फोरि कैं॥ जोगिनी जमाति जोरि रुंड बने तापस से तीर नीर बैठे हे समरि सरि षोरि कै॥ श्रोनित सों सांनि सानि गूद सतुवासे षात एक ये तपि पत बहोरि घोरि घोरि के॥ तुलसी बेताल भूत साथ लिये भूत नाथ हेरि हेरि हंसत सिवा सो हाथ जोरि कै॥ १३८॥

इंद्रव ॥ राम सरासन ते चले तीर रहे न सभी हृडा वरि फूटी ॥ रावन धीर न परि गनी लखि ले कर षर जोगिनी जूटी ॥ श्रोनित छीट छटानि छुटी तुलसी प्रभु सोह महा छवि छूटी ॥ मानो मरकत सैल विसाल में फैलि चली वढ़ बीर वहूटी ॥ १३९ ॥ मन हरन ॥ मारे मेघ नाद सो प्रचारि भारी भट आपने आपने पुरुषारथ न ढोले की ॥ घायल लषन लाल लषि बिलषाने राम भई आस सिथल जग निवास ढील की ॥ भई कोन मांह की ह सिय कोन तुलसीस कहै मैं बिभीषन की कछु न सवाल की लाज गाइ बोल कीनि वाजे की सभांर सार साहिब है सम से बलैया लव सील की ॥ १४० ॥ कानन वास दसानन सो रिपु आनन श्री शशि जीजि लियो है ॥ वालि महा बल सालि दलो कपि पाल बिभीषण भूप कियो है ॥ तीय हरी रण बन्धु परो परो पै भरो सरना गत सोच हियो है ॥ वाह पगार उदार कृपाल कहा रघुबीर सो वीर हियो है ॥ १४१ ॥ मन हरन ॥ चलो हनुमान सुनि जातु धानु काल नेम पठायो सो मुनि भयो पायो फल छलिकै ॥ सहसा उपारो है पहार व ड़ भोजन कौ रष वारे भारे मारे भूमि भटि दलि कै ॥ बेगि बल मास्त सराहत कृपा निधान भरत की कुसल अन्च ल्यायो है चलिकै ॥ हाथ हरि नाथ विकाने रघुनाथ जनु सील सिंधु तुलसीस भलो मानो भाल कैं ॥ १४२ ॥ इंद्रव ॥ लीन्हे उषारि पहार विसाल चलो तिव काल बिलम्बन लायो ॥ मारुत नंदन मारुत को मन को षग राज को बेगि लजायो ॥ तीषी तुरा तुलसी कह तौ पै हिये उपमा को समानङ्ग आयो ॥ मानो जरत पर घन की नभ लीक लसी कपि जो धुपि धायो ॥ १४३ ॥ मन हरन ॥ लाप दियो कानन भो आनन सुभानन सो वैरी भोद सानन सो तिय को हरण भो ॥ बालि बलि सालि दल पालि काय राज कै बिभीषने विराजि सेन सागर सरण भो ॥ घोर हेरि हेरि त्रिपुरारि विधि हारि हीय घायल लषन बीर वानर

वरण भो ॥ ऐसे सोक में बिलोक के बिसोक पल हीमें सब
ही को तुलसी को साहिब वर भो ॥ १५४ ॥ ईदव ॥ कुम्भकर
ण हनो रन राम दलो दश कंधर के दश कंधर तोरे ॥ पूषन वं
स विभूषन पूषन तज प्रताप गरे परि ओरे ॥ देव निसान
बजावत आवत गो मन भावत मोरे ॥ नाचत बद्दर मालु
सबे तुलसी कहि हारे हा हाते अहारे ॥ १५५ ॥ मनहरन ॥ मारे
रन राति चर रावण सकुल दल अनुकूल देव मुनि फूल बरषत
हैं ॥ नाग नर किंनर विरंचि हरि हेरि हेरि पुलक सरीर हिये
हेतु हरषत हैं ॥ बाम ओर जान की कृपा निधान के विराजी
देषत विषाद मिटे मोद करषत हैं ॥ आयसु भो लोक निसिध
रि लोक पाल सब तुलसी निहारि करि दिये सरषत हैं ॥ १५६
॥ इति श्री लंका काण्ड समाप्त: ॥ ६ ॥

अथ उत्तर काण्ड लिख्यते

॥ इंदव ॥ बालि से बीर विदारि सु कंठ थपो हरषे सुर बाजन बा
जे ॥ पल में दलो दास रथी दश कंधर लंक विभीषन राज बि
राजे ॥ राम सुभाव वने तुलसी हुलसे हमसे अलसी गल
गाजे ॥ कायर कूर कपूत न की हद ते गरीब निवाज नि
वाजे ॥ १५७ ॥ बेद पढ़े बिधि संभु सभीत पुजावन रावन
सो नित आवे ॥ दानव देव दयावन दीन दुखी दिन दूरहि ते सि
र नावे ॥ ऐसेहु भाग भगे दस माल ते जो प्रभुता कवि को बिद
आवे ॥ राम ते बाम भये तुलसी तेहि बाम सबे सख संपति ल
वे ॥ १५८ ॥ वेद बिरुद्ध महा मुनि सिद्ध ससोक किये सुर लो
क उजारो ॥ और कहो कउ सीय हरी तबहूं करुना मय को
प निवारो ॥ सेवक छोह ने छाडि छमा तुलसी लष्यो राम सु
भाव तिहारो ॥ लौं ली वडा बिदलो दश कंधर जौलो बिभीष
न लात न मारो ॥ १५९ ॥ सोच समुद्र बिमज्जत का दि कपीस
कियो जग जानत जैसो ॥ नीचनि सा चर बरी को बंधु निभीष
न कीन सुरंदर लैसो ॥ नाम लिये अपनाय लिये तुलसी सोक

हो कलि कोन अनै सो॥ आरति आरति भंजन राम गरीबनि
वाजन दूसरी औसो॥ १५०॥ सवैया॥ मतिपुनीत किये कपि भानु जो
पालै कृपाल ज्यौं बाल तनूजो॥ कूर कुजाति कपूत अघी सब की सुधि
रैं ज्यौं करै नर पूजो॥ सज्जन सीव विभीषन सों अजहूं विलसैवर बं
धुबधूजो॥ कोसल पाल बिना तुलसी सरनागत पाल कृपाल न दू
जो॥ १५१॥ तीय सिरोमन सीय तजी जिन पावक की कलुषाय दही
है॥ धर्म धुरंधर बंधु तजो पुर लोगनि की बिधि बोलि कही है॥
कौस निसाचर की करनी न सुनी न बिलोकनि चित्र लिही है॥
राम सदा सरनागत की अनबोही अनेसी सुभाय सही है १५२
अपराध अगाध भयें जनतें॥ अपने उरआनत नाहिन जू॥ गनि
का गति गीध अजामिल की गनि पातक पुंज सिराहिन जू॥
लिये बारक नाम सुधार दिये जहि धाम महा मुनि जाहिन जू॥
तुलसी भजि दीनदयाल हि रे रघुनाथ अनाथहि दाहिन जू
१५३॥ प्रभु सत्य करी प्रहलाद गिरा प्रगटे नरके हरि षंभ महां
॥ रूष राज गहो गजराज कृपा तकि काल विलंब कियो न त
हां॥ सुर साषि दे राषिहै पंडुबधू पटलूटत कोटिक भूप जहां
तुलसी तजि सोच बिमोचन कौ जन कौ पन राषो न राम कहां॥
नरनारि उघारि सभा महि होत दियो पट सोच हरो मन को॥ प्र
हलाद बिषाद निवारन वारन तारन भीत अकारन को॥ जो
कहावत दीन दयाल हरी जेहि भार सदा अपनो अन को॥ तुल
सी तजि आन भरोस भजे भगवान भलो करिहैं जन को १५४
रिषिनारि उधारि किये सठ केवट मीत पुनीत सुकीर्त्ति लही॥
निज लोक दियो सिवरी षग को कपि थाप्यो सो मालिम है स
वही॥ दससीस बिरोध सभीत बिभीषन भूप कियो जग लीक
रही॥ करुनानिधि को भजु रे तुलसी रघुनाथ अनाथ के ना
थ सही॥ १५५॥ कौशिक पियवधू मिथला पति सेवक सोच
हरे पल माहैं॥ बालि सदा नन बंधु कथा सुनि शत्रु सुसाहि
ब सील स है॥ ऐसी अनूपम हे तुलसी रघुनाथ कके अगुनी

गुन गाहे ॥ आरत दीन अनाथ कौं रघुनाथ करै निज हाथ
न छाहैं ॥ १५७ ॥ तैं विसारे विसाहत औरन और विसाह के
वेचन हारे ॥ व्योम रसातल भूमि परे निर कूकर सावित ते दुष्
रे ॥ तुलसी तिहि सेवत क्यौं न मरें रज तैं लघु को कहे मेरु ते भारे
स्वामी सुसील समरथ सुजान सो तासो तुहीं दशरथ दुलारे ॥
१५८ ॥ जातु धान भालु कपि केवट विहंग जेजे पाल नाथ सबै
तेत भए काम काज कौ ॥ आरति अनाथ दीन मलिन सरन गये
राषि सन माने सो सभाव महा राज कौ ॥ नाम तुलसी पै मोंडो भा
गतें कहायो दास कीन्हो अंगीकार एते बडे दगा वाज कौं ॥
साहिब समरथ दशरथ के दयाल देव दूसरो न तोसीं तुही
अपने की लाज कौं ॥ १५९ ॥ महा बली बाली दलि कायर सु
कंठ सो कपीस ते कियो कृपाल हौंन काहू काम कौं ॥ भ्रात घा
त पातकी निसा चर सरण गयो कीन्हों अंगी कार नाथ एते ब
डे धाम कौं ॥ राम दशरथ के समर्थ तेरो नाम लिये तुलसी से कू
र कौं कहत गज राम कौं ॥ अपने निवाजे ही की लाज मह
राज सब समुझत सुभाव मन मुदित गुलाम कौं ॥ १६० ॥ रू
प सील सिंधु गुन बंधु दीन कौं दयाल कृपा की निधान जान
मन वीर को ॥ श्राध कियो गीध को सराहे फल सिवरी के सि
ला साप समन निवाहो नेह कोल को ॥ तुलसी उछाह होत
राम को सुभाव सुनि कोन बोलि जाय न विकाय बिन मोल को ॥
ऐसे हू सुसाहिब सों जाको अनु रागन सो वडोई अभागी भागो
भरो लोभ लोल को ॥ १६१ ॥ सूर सिर ताज महा राजनि के राजा
राम जाको नाम लेत ही सषेद होत ऊसरी ॥ सोहिव कहां जहां
न जान कीस सो सुजान सुमिरें कृपाल के मराल होत बूसरो ॥
केवट पषानु जात धान कपि भालु तार अपनायो तुलसी सी
धिग धिग धम धूसरो ॥ बोल को अटल बांह को पगार दीन बं
धु दूवरे को दानी न दया निधान दूसरो ॥ १६२ ॥ कीवे को विशो
क लोक लोक पाल हतें सब कोऊ न भयो है चरवाहो कपि भालु कौ

पवि को पहार कियो ख्याल ही कृपाल राम बापुरो बिभीषन वि
रो हाह तो बालि को ॥ नाम बोट लेत ही बिचार होत षोंटे षल
चोर बिन मोट पाय भयो न निहाल को ॥ तुलसी की वारि वलि
ढील होल दया सिन्धु बिगरी सुधारि वे कों दूसरो दयाल कों ना
म लियो पूत को पुनीत कियो पातकीस आरति निवारी प्रभु पा
हि कहे पील की ॥ छलनि की छोडी सी निगोडी छोडी जाति-
पांति कीन्ही लीन आपु में भामिनीं भांडे भील की ॥ तुलसीयों
नारि वो बिसारि वो न अंत मोहूं नीके है प्रतीति रावरे सुभाव सी
ल की ॥ देव तो दया निकेत देत दानि दीन कौं ये मेरे ही अभाग
नाथ मेरी वार ढील की ॥ १९४ ॥ आगे परे पाहन कृपा किरात
कोलन कपीस निसचर अपनाये सुर मांथ जू ॥ सांची सिवका
ई हनुमान की सुजान राय रिनि याक हाये ह्वै बिकाने ताके
हाथ जू ॥ तुलसी से षोंटे षरे होत वोट नाम ही की महगी माटी
मगहू की मृग मद साथ जू ॥ सन बिधि पारस श्री षंड वरनत
वेद आपने सुभाय सों कुभाय जन नाथ जू ॥ बात चले बात-
कौ न मानि वो बिसम बालि का की सेवा रीझि कौ निवाजो रघु
नाथ जू १९५ ॥ कौसिक के चलत पाषान की परसि पाय टूट
त धनुष वनि गई है जनक की ॥ कोल खल सिवरी विहंग भा
लु एनि चर रतीन के लाल चीन्ह आपति सुमन की ॥ कोटिकला
कुषाल कृपाल नत पाल वलि बात जो केतिक तृन तुलसी तन
क की ॥ राय दशरथ के समर्थ राम राज मनि तेरे हेरे लोपे लि
ये बिधि हू गनक की ॥ १९६ ॥ सिला साप पाय गुह गीध की
मिलाय पुनि सिवरी के आपु पांय चलि गये सो सुनी में ॥ सेवक
सराहे कपि नायक बिभीषन भरत सभा सादर सनेह सुरधुनी
में आलसी अभागी आधी आरत अनाथ पाल साहिब सम
र्थ एक नीके मन गुनी में ॥ दोष दुष दारिद दलैया दीन बंधु
राम तुलसी न दूसरो दया निधान दुनी में ॥ १९७ ॥ मीन
बालि बंधु पूत बंधु दूत दसकंध बंधु संचिन सराध साधु सिव

री जराय कौ ॥ बड़े एक एक ते अनेक लोक लोक नाथ अप
नेकी तौ कहै गो घराय कौ ॥ लंक जरी जोही जिय सोचसो
बिभीषन कौ काहू ऐसे साहिब की सेवा न घराय कौ ॥ सांक
रे के सस्न को सद्दे सराहिवे को राम सोन साहिव न मोसो
घराय कौ ॥ १६८ ॥ भूमि पाल व्याल पाल नाक पाल लोक
पाल कारन कृपाल मैं सब के जीकी थाह ली ॥ कादर को
आदर काहू के नाहि देषियत सबनि सुहाते हैं ॥ सुजान से
वा टाल हीं ॥ तुलसी सुभायक है वाहि कछू पच्छि पात के
ने ईस किये कीस भालु पास माहली ॥ राम ही के द्वार पै
तुलाय सन मानियत मोसे दीन दूबरे कपूत कूरकाहली
॥ १६९ ॥ सेवा अनुरूप फल देत भूत कूप जौं बिहीने गुन पथिक
पिया से जात पथि के ॥ लेषे जोखे चोखे चित तुलसी स्वारथ
के हित नीके देखे देवता दिवैया गने गथ के ॥ गीध गन्यों
गुर कपि भाल माने मीत के पुनीत गीत सा के सब साहि
ब समर्थ के ॥ और प्रभु परषि कै ताप है सुलाषि लेत
लसम को खसम तुही है दशरथ के ॥ १७० ॥ रीति महा रा
ज की निवाजिये जो मागनो सो दोष दुख दारिद्र के कै सब
छोड़िये ॥ नाम जाको काम तरु देत फल चारि ताहि तुलसी
विहाय को वंबूर रंड गोड़िये ॥ जाचै को नरेस देस देस
को कलेस करे देहै तौ प्रसन्नि है बडी बड़ाई बौरि है ॥ कृपा
पाथ नाथ लोक नाथ नाथ सीतानाथ तजि रघुनाथ हाथ
और काहि ओडि है ॥ १७१ ॥ जाके बिलोकत लोकप होत
बिसोक लहै सुर लोक सो ठौर ही ॥ सो कमला तजि चंचल
ता और कोटि कलारि ऊरा सिर मौर ही ॥ ताको कहाय कहा
तुलसी तूलजाहिन मागत कूकर कौ रही जान की जीवन की
जन है जरि जाउ सो जीह जो जाचत और ही ॥ १७२ ॥ जड
पंच मिले जेहि देह करी करनी लखि धौं धरनी धरकी ॥ जन
की बहु क्यौं करि हैन सम्हार जो सार करै सो चराचर की ॥

तुलसी कहु राम सभान को आन जो सेवक जासु रमा घर
की॥ जग मैं गति जाहि जगति पति की पर वाहिब ताहि कहा न
र की॥२७३॥ जग जाचिये कोउ न जाचिये जो जिय जाचिए जा
नकी जानहि रे॥ जेहि जाचक जाचत ता जरि जाय जो जारति जोर
जहानै रे॥ गति देषि विचार विभीषन की अरु आनि हिये ह
नुमान हि रे॥ तुलसी भजि दारिद दुःख दवानल संकट की
टि कृपा नेहि रे॥२७४॥ सुनि कान हिये नित नेम लिये रघुनाथ
क के गुण गाथहि रे॥ करि संग सुशील सु संतनि सौं तजि कूर
कुपंथ कुसाथहि रे॥ सुख मन्दिर सुन्दर रूप सदा उर आनि धरे
धनु भाथहि रे॥ रसना निसि वासर सादर सौ तुलसी जपु जान
की नाथहि रे॥२७५॥ सुत दार अगार सखा परिवार। बलोकि म
हा कुस साजहि रे॥ सब की ममता तजि कैं समता साजि संत स
भा मन राजहि रे॥ नर देह कहा करि देषि विचार विगार
गमारन काजहि रे॥ जिन डोलहि लोलुप कूकर ज्यों तुल
सी जपि कौसल राजहि रे॥२७६॥ विषया पर नारि निसा त
रु नाइ सो पाय परो अनुरागहि रे॥ जम के पहरू दुष रोग वियोग
विलोकत हून विरागहि रे॥ ममता वस तैं सब भूलि गयो भयो
भोर महा भय भागहि रे॥ जरठाय दिसा रवि काल उयो अ
जहूं जड़ जीवन जागहि रे॥२७७॥ जनम्यो जहि जोन अनेक
क्रिया सुष लागि करी न परै वरनी॥ जननी जन कादिहि राम
वे भूरिन दूरि भई उर की रजनी॥ तुलसी अव राम को दास
कहाय हिये धरि चातक की करनी॥ करि हंस को वेषु बडो
सबतें तजि धोवक वायस की करनी॥२७८॥ भलि भारत भू
मि भले कुल जन्म समाज सरीर भलो लहिकै॥ ममता तजि
कै वर पाषर वाय म मारुत घाम सदा सहिकै॥ जो भजै भगवान
सयान सोई तुलसी हठ चातक ज्यों गहिकै॥ नत और सबै
विष बीज बये हरि हाटक कामदु कानहि कै॥२७९॥ सो सु
कृती सुचिवंत सु संत सुशील सुजान सिरोमणि है॥ सुकृती

पै जासु मनावन आवत पावन होत कै नातन दै ॥ गुन गेह स नेह कौ भाजन सो सबही सों उठाय कहौं भुज दै ॥ सति भाय सदा छल छांडि सबै तुलसी जो रहै रघुबीर कौ है ॥ १८० ॥ सो जननी सो पिता सोई भ्रात हो भामिनी सो रुत सो हितु मेरो ॥ सोइ सगो सो सषा सोई सेवक सो गुरु सो सुर साहिब चेरो ॥ सो तुलसी प्रिय प्रान समान कहां लों बनाय कहौं बहु तेरो ॥ जो तजि देह कौं गेह कौ नेह सनेह सों राम कौ होय सबेरो ॥ १८१ ॥ राम हि मात पिता गुरु बंधु औ संग सषा सुत स्वामि सनेही ॥ राम कौ सोह भरौ सो है राम कौ राम रंगी रुचि राच्यौ न केही ॥ जीवत राम मुये पुनि राम सदा रघुनाथहि की गति जेही ॥ सोई जिये जग मैं तुलसी न तु डोलति और मुये धरि देही ॥ १८२ ॥ राम सरूप अगाध अनूप बिलोचन मीनत कौ जलु है ॥ श्रुती राम कथा मुष राम को नाम हिये पुनि रामहि को थलु है ॥ मति रामहि सों गति रामहि सों रति राम सों रामही को बल है ॥ सब कीन कहौं तुलसी के मते इतनों जग जीवन कौ फल है ॥ १८३ ॥ दस रत्थ के दान सिरोमनि राम पुरान प्रसिद्ध सुन्यौ जसु मैं ॥ नर नाग सुरासुर जाचक जो तुम सों मन भाव तो पायो न मैं ॥ तुलसी कर जोर करै बिनती जो कृपा करि दीन दयालु सुनैं ॥ जेहि देहि सौं नेह न रावरे सौं ऐसी देह धराय सो जाय तनैं ॥ १८४ ॥ झूठो हो झूठो है झूठो सदा जुग संत कहै तजे अन्त लहा है ॥ ताको सहै सठ संकट कोटि क काटन दन्त करन्त कहा है ॥ जान पने को गुमान बडो तुलसी के बिचारि गवारि महा है ॥ जान की जीवन जानेन तो फिरि और की जानि बौ जान्यौ कहा है ॥ १८५ ॥ तिन के घर सूषन पान भले जड़ता बसनें न कहे कछु है ॥ तुलसी जेहि राम सनेह नहीं सु सही पसु पूछ बिषानन है ॥ जननी कत भार मुई दश मास भई किन बांझ गई किन है ॥ जरि जाहु सो जीवन जान की नाथ जिये जग मे तुम सो बिन है ॥ १८६ ॥ जग बाजि घटी जल भरि भरा बनि ना

सुत मोहत के सव है ॥ धरनी धन धाम सरीर भलो सुरलोक सु चाहिये वासु वसो ॥ सव फोकट साज कहै तुलसी अपनो नक छू सपनो सपनो दिन है ॥ जरि जाव सो जीवन जान की नाथ जिये जग में तुम्हरो बिनु है ॥ १८७ ॥ सुर राज सौं राज समाज स मृद्धि विरंचि धनाधिप से धन भौ ॥ पव मान सो पावक सो जम सो म सो पूषन सो भव भूषन भो ॥ करि जोग समीरन साधि समाधि के धीर बडो बसहू मन भो ॥ सब जाय सुभाय कहै तुलसी जो न जान की जीवन कौ जन भो ॥ १८८ ॥ काम से रूप प्रताप दिने स से सोम से सील गनेस से मानैं ॥ हरि चंद से सांचे षडे बिधि से मघ वासे महीप विषे सुख सानैं ॥ सुक से मनि नारद से वक्ता चरंजीवन लोमस तें अधि कानैं ॥ ऐसे भये तौ कहा तुल सी जोपै राजिव लोचन राम न जानैं ॥ १८९ ॥ कूमत द्वार अनेक मतंग जंजीर जडे मंद अंबु चुचाते ॥ तीषे तुरंग मनो गति संचलपोनके गौन हूते बदि जा ले ॥ भीतर चन्द्र मुखी अवलोक त बाहिर भूप जरे न समाते ॥ ऐसे भये तौ कहा तुलसी जो पै जानकी नाथ के रंग न राते ॥ १९० ॥ राज सुरेस पचासक को विधि सो कर जाव पये पर पायें ॥ पूत सपूत पुनीत प्रिया निज सुन्दरता रति को मद नायें ॥ संपति सिद्धि सबै तुल सी मनकी मन साधि सबै चित लायें ॥ जान की जीवन जाने विना जन ऐसे हू जीवन जीवत जाये ॥ १९१ ॥ रूपगीत ललित जो रोटिनको घर एक फिरे खुरपा बरिया ॥ तिन सोने के मेरु से ढेर लहे मन तौन भरो घर जो भरिया ॥ तुलसी दुख दूनो दसा दुध पेषि किये सुख दारिद को करिया ॥ तजि आस भी दास रघुपति को दसरत्थ को दान दया दरिया ॥ १९२ को भरि दे हरि के रितये रितवे हरि पुनि को हरि जो भरि है ॥ उथपै तेहि को जेहि राम थपै थपि है हरि को तिहि को हरि है ॥ तुलसी जिय जानि हिये अपने सपने नहि कालहु से डरि है ॥ कु मया कछु हानिन औरन की जोपै

जानकी नाथ कृपा करि हैं ॥ १९३ ॥ व्याल कराल महा विष पा
वक मत्त गयंदन के रद तोरे ॥ सासत संकि चली डरपै हुतकिं
करते करनी मुख मोरे ॥ नेक विषाद नहीं प्रहलादहि कारन
के हरि केवलि हो रे ॥ कौन की त्रास करै तुलसी जो राखि है रा
म तौ मारि है कोरे ॥ १९४ ॥ कृपा जिनकी कछु काज नहीन
अकाज कछू जेहि के मुख मोरे ॥ सो करते पर वाहित जाहि
विषानन पूछिफिरे दिन दोरे ॥ तुलसी तिनके रघुवीर से नाथ
समरथ से सेवत रीझत थोरे ॥ महा भव भीर परी तेहिधौ विच
रे धरनी तिन सों तन तोरें ॥ १९५ ॥ कानन भूधर वारिवया
रि दवा दु व्याधि महा अरि घेरें ॥ पुनि संकर कोटि जहां तुल
सी तहा मात पिता सुत वंधुन नेरें ॥ रषिय राम कृपाल तहां
हनुमान से सेवक हैं जिन केरें ॥ व्योम रसातल भूतल में रघु
नाइक एक सहायक मेरें ॥ १९६ ॥ जवही जम राज रजायसु
तें मोहि ले चलि हैं जम बांधिन दैया ॥ सासति घोर पुकारत
आरत कौन सुने चहुं ओर डटैया ॥ एक कृपाल तहां तुलसी
दशरथ्य को बालक वंदि कटैया ॥ तात न मात न स्वामी सषा
सुत वंधु विसाल विधि करैया ॥ १९७ ॥ जहां जम जातन घोर
नदी भट कोटि जलचर दंत षिवैया ॥ जहां धार भयंकर वा
र न पार न वाहित नाउन मीत षिवैया ॥ तुलसी जहां मात पिता
न सषा नहि काहू २ अवलंव दिवैया ॥ तहां विन कारन रा
म कृपाल विशाल भुजा गहि काढि लिवैया ॥ १९८ ॥ जहां हि
न स्वामिन संग सषा वनिता सुत वंधुन वाप न मैया ॥ काय गि
रा मन के जन के अपराध सवै छल छांडि छमैया ॥ तुलसी ते
हि काल कृपाल विना दूजो कौन है दारुण दुःख दिवैया ॥
जहां सब संकट दुर्घट कोटि तहां मेरी साहव राम दिवैया ॥
१९९ ॥ तापस को वर दायक देव सवै पुनि वैरि वढा व
न वाढे ॥ हरिहि कोप कृपा पुनि थोरे हि वैठि कै जो इन
तोरन ठाढे ॥ ठांकि वजाय लियो गज राज कहां लौ कहौ

केहिसोइक काढे॥ आरत के हित नाथ अनाथ के राम सहायस ही दिन गाढे॥ २००॥ जप जोग बिराग महा मख साधन वा स दया दम कोटि करै॥ मुनि सिद्ध सुरेस गणेस महेश से से वन जन्म अनेक मरै॥ निगमा गम ज्ञान पुरान पढै तपसा नल में जुग पुंज जरै॥ मन सों पन रोपि कहे तुलसी रघुना थ बिना दुख कौन हरै॥ २०१॥ पातक पीन कुदारिद दीन मलीन धरै कथरी कर वाहें॥ लोक कहै विधिहू न लि षा सपने नहिये अपनो करवाहें॥ राम को किंकर सो तुलसी समु झेही बनै कहब्यो नरवाहे॥ ऐसे को ऐसो भयो कबहू न भजे बिन वामर को चर वाहे॥ २०२॥ मातु पिता जनि जा नि तजो बिधिहू न लिषो कछु भाग भलाई॥ नीच निराद र कादर भाजन कूकर टूकनि लागि ललाई॥ राम सुभाव सु नो तुलसी प्रभु सो कहि वार कपंट खलाई॥ स्वारथ को परमा रथ को रघुनाथ से साहिब वे रिन लाई॥ २०३॥ पाप हरे परिता प हरे तन पूजत ही नल सीतल नाये॥ हंस किये बकते बलि जाऊं कहांलों कहौं करुणा अधिकाए॥ कलि काल विलो कि कहै तुलसी मन में प्रभु की तज रीत अघाए॥ जन्म जहां तहां रावरे सौं निबहै भरि देह सनेह सगाये॥ २०४॥ लो ग कहैं और हौंहू कहीं जन षोटो परे रिषु ताप कही कौ॥ रावरी राम बडी लघु ताज सवेरो भयो सुख दायक ही कौ॥ कै यह हान सही बलि जाऊं कै मोह कहो निज लायक ही कौ॥ आनि हिये हित मान करो जो मै ध्यान धरो धनु सायक ही कौ॥ २०५॥ आपुही आपु को नीके हौं जानत रावरे नाम भ रायो गढायो॥ कीर ज्यों नाम रटै तुलसी सो कहै जग जा नकी नाथ पढायो॥ सोई है षेर जो वेद कहै न घटे जन जो रघुवीर बढायो॥ हौं तो सदा खर को असवार तिहारे ई नाम गयंद चढायो॥ २०६॥ घना अक्षरी॥ छुसतें सु वार के पहार हते भारी किये गारो भारो पंचमें पुनीत प

हा पायकै ॥ होतो तैसो तव तैसो अब अध माई कै भरौ पेट राम राई तेरो गुन गाय के ॥ अपने ही ओर की तौ लाजकीजे महा राज मेरी ओर हेरि कै न बैठिये रिसाय कै ॥ तुलसी ति हारे राम रावरी सपथ करौं भावै सोई करो प्रीति आन रीति चाय कैं ॥२०७॥ वेदन पुरान गान जानो न विज्ञान ध्यान धरना समाधि साधु साधन प्रवीनता ॥ नाहिन विराग जो जाग भाग तुलसी के दया दान दूवरो हौं पापही की पीनता लोभ मोह काम क्रोध दोस कोस मोसो कौन कलहू जो सी षलेड मेरी पै मलीनता ॥ एकई भरोसो राम रावरा कहाव त हूं रावरे दयालदीन बन्धु मेरी दीनता ॥२०८॥ रावरो कहा वौं गुन गावौ राम रावरोई रोटी द्वै हौ पावौ राम रावरे ही का नि हौं ॥ जानत जहान मन मेरे सो मोहि आपु तुम अपना यहौ तवही परि जानि हौ ॥ पांच की प्रतीति नभरो सो मोहि आपनोइ तुम अपनाइ हौ तवही परि जानि हौ गढि गढि छोलि छोलि कुन्द कैसी भाई वाते जैसी मुष कहौ तैसी जव मन आनि हौ ॥ २०९ ॥ बचन विचार कर तवडू षुवा र मन सो विकार मलिन मन की निधान है ॥ राम की कहा य नाम वेचि वेचि षाय सेवा संग तिन जाय पाछिल कोऊ षत षत षातु है ॥ नेह पर तुलसी को लोग भलो भलो कहै ताको दूसरो न हेतु एक नीके को निदानु है ॥ लोक रीत विदित विलोकियत तहां तहां स्वामी के सनेह स्वानहू को सनमातु है ॥ २१० ॥ स्वारथ की साज पर मारथ की समा ज नही मोसो दगावाज दूसरो न जग जाल है ॥ करिन आ यो करीन करौंगो कर तूति भली लिषीन विरंचि हैं भलाई भूलि भाल है ॥ रावरी सपथ राम नामही तें गति मेरी इही झूठो सी चो सी तिलोकतिहूं काल है ॥ तुलसी को भलो पेहि हरिही किये कृपाल कीजे कीजै न विलंब बलि पानी भरी षाल है ॥ २११॥ राम कौन साजन विराग जोग जाग जिय का दुरन

छाडि देत हांदि बो कुठार को ॥ मन राज करत अकाज भ
यो आजु लागि चूंहै चरु चीर पै लहै न टूक टाक को ॥ पये
कर लार बडे कूर को कपाल अति पायो नाथ पारस हौं ल
लची बराट को ॥ तुलसी की बनी राम रावरे बनाये भतौ धो
बी कौसौ कूकरान घर को न घाट कौ ॥ २१२ ॥ ऊंचौ मन ऊंची
रुचि भाग नीचो निपट ही लोक रीति लायक न लंगर पषार है ॥
लोक बेद जान हैं जाहर तुम्है कृपाल आदि मध्य अंत सबै दुख
ही कौ भार है ॥ स्वारथ अगम परमारथ की कहा चली पेट की क
ठिन जग जीवन कौ वार है ॥ तुलसी की बाजी राषी रामही के
नाम न तो भेट पर वान सौं न मूढ हौं मे वार है ॥ २१३ ॥ अपत
उतार अपकार को अगार जग जाके छाह छुए सह मन व्या
ध बाधको ॥ पातक पहोमि पालिवे को सहु सान मसे कान
न कपट को पयोधि अपराध को ॥ तुलसी से बांम कौ भी र
हिनी सुधा निधान सुनत सिंहात सब सिद्धि साध साध
को ॥ ऐसी राम नाम छांडि भजत जी और देवता हि समक
भी कूर अतिही अगाध को ॥ २१४ ॥ सब अंग हीन सब सा
धन विहीन मन वचन मलीन सब कूर कर तूति हौं ॥ बुधि
बल हीन भाव भक्ति तें बिहीन ज्ञान गुनहीन हीन भोग हू
विभूति हौ ॥ तुलसी गरीब की गई बहोरि राम नाम जाहि
जपि जीह राम काहू वैठो धूत हैं ॥ प्रीति राम नाम सौं प्रतीत
राम नाम को प्रसाद राम नाम के पसारि पाय सूते हैं ॥ २१५
॥ मेरे जान जब तें जियत हौं जन मि जगत व तें बिसा हो
राम लोभ मोह काम को ॥ मन तिन हीं कों सेवे तिन ही
सैं भावनी को बचन बनाय कहै हौं गुलाम राम को ॥
नाथ हू न अपनायो लोक रूढ है परीयें प्रभुह अैम बल औ
ताप प्रभु नाम को ॥ अपनी भलाई भली कीजे तो भलाई न तो
तुलसी को षलै गो खजानो षोटे राम को ॥ २१६ ॥ जोग न
विराग जप तप जाग लास ब्रत तीरथ नयम जानो वेद विधि

कि मिटै हैं ॥ तुलसी सो पोचन भयो है नहि ह्वैहै कहूं सोचै स
ब पाप को आय कैसे प्रभु छमि हैं ॥ मेरी तो है डर रघुवीरसु
नो सांची कहो बल अन सो हैं तुम सुजन निगम हैं ॥ भलेसु
कृती के संग मोहि तुला तोलियै जो नाम के प्रताप भारीमेरी
वोरन मिटै हैं ॥ २१७ ॥ जाति के कुजाति के अजाति के पेटा गि
लागि षाये टूक एक के बिदित वात दुनीसों ॥ मानसवचन
काम किये पाप सति भाय राम को कहाई दास दगा वाज
पुनी सो ॥ राम नाम को प्रभाव बड़ी महिमा प्रतापतुलसी
से जग मानि यत महा सुनी सों ॥ अतिही अभाग अनुराग
ताल न राम पर मूढ ऐतो बड़ो अचरज देष सुनी सो ॥ २१८ ॥
जाये कुल मगन वेधा बनो बजाये सुनि भये परितापपाप
जननी जनक को ॥ बारें तें ललात विललात द्वार द्वार दीन
जानत हैं चारि फल चारिही चनक कों ॥ तुलसी को दास
राम साहिब समर्थ को सुसेवक सुनित सोच विधिहू गुन
क को ॥ नाम राम रावरो सयानो कै धौं वावरो जो करतहै॥
गरू अतलनहू ते तनक को ॥ २१९ ॥ वेदहू पुरान कही लोकहू
विलोकियत राम नाम सो जो रैम सकल भलाई है ॥ कासी
हू मैं मरे उपदेशत महेशात महेश सोई सो धन अनेक चितई
ने मुहलाई है ॥ छाछि को ललात जेते राम नाम के प्रशाद
षात खुनसात सौधे दूध की मलाई है ॥ राम राज सुनियत नीति
की अवधि राम नाम रावरे तो दाम चाम की चलाई है ॥ २२
० ॥ संकटन सोच सोच संकटन परन ज्वर जरत प्रभाव
नाम ललित ललाम को ॥ चढी उतरत विगरी सुधरत बा
त होन देपि दाहिनो सुघाउ विधि बाम को ॥ भागत अभा
ग अनुरागत विराग भाग जात आलसी तुलसी हू से
निकाम कौ ॥ धारी धारि परि के गुहरि हित कारी होतआ
ये मीचु मिटत जपत राम नाम कौ ॥ २२१ ॥ पीधरो अ
धम जड जांजरो जरत मन सूकर के सावक धका ढकेलि

मगमैं॥ गिरि हिरों हहरि हराम हाहराम हनो हाई हाइ करत परि
गयो काल कंदमैं ॥ तुलसी बिशोक है त्रिलोक पति लोक गयो
नाम के प्रताप तात बिदित है जगमैं ॥ सोइ राम नाम तौ सनेह
सों जपत जनति नही की महिमा कही न जात अगम मैं॥ २२२॥
जप कीनू तपकीन कियो न कमाई वाग यज्ञन विराग त्याग तीरथ
न तन कौं॥ भाई को भरोसो न षरो बैर बरी हू सो बल अपनो
न हित जननी जन कौं॥ लोक कौन डर पर लोक कोन सोच दैव
देवन सहाइ गर्व धर्म कौन धनकौ ॥ रामही के नामते सो सांचो
लगै राम लग राम को सुभाउ कछू तुलसी के मान कौ॥ २२३
ईसन गनेसन धनेसन दिनेसन सुरेश सुरगौरी गिरा पति न
हि जपने ॥ तुम्हारेई नाम को भरोसो भव तरिवे को बैठे उठे जा
गत वागत सोयें सपने ॥ तुलसी कूं बावरो सो रावरो ए रावरासो
रावरेउ जानि जियकी जिये जो अपने ॥ जान की जीवन मेरे
रावरो बदन फेरे ढावन सभाव कहूं सबल निरपने ॥ २२४॥ जा
हर जहान में जमानो एक भांति भयो बेचिये बिबुध धेनु राम
भी वेसाहिये ॥ ऐसेहू करालकलि काल ने कृपाल तेरे नाम के
प्रतापन त्रिताप तन दाहिये ॥ तुलसी तिहारो मन बचन करम
तन रानाते नेह निज बारलें निवाहिये॥ रंक के निवाज रघुराज
राजा राजनि के उमिर दराज महाराज तेरी चाहिये ॥ २२५॥ स्वार
थ सयान प्रपंच परमारथ॥ कहायो राम रावरो हौं जानत जहां
न हौं ॥ नाम के प्रताप पाय आतुलौं निवाही नाके आगे को
गो माई स्वामी सबल सुजान है ॥ कलि की कुचालि देखि दिन
दिन दूनी देव पाह रुई चोर देषि हिह हहरान हैं ॥ तुलसीकी
वार वार वारही सम्हार की बीज दीप कृपा निधानं सदा साव
धान है ॥ २२६॥ दीन दीन दुखी देषि दारिद दुकाल दुकव
दुरित दुरंत दुख सुकृत सकोच है॥ मागे पैत पावत प्रचार पात
की प्रचंड काल की कराल भले कों होत पोच है ॥ अपने सो
एक अवलंब अब हित भयो समरथ सीता नाथ संकर वि

सोच है ॥ तुलसी की सोसराहिये कृपाल राम नाम के भरो सें
परि नाम को न सोच है ॥२२७॥ मोह मद मातो रातो कुमति
कुनारी सों विसारी लोक लाज सब आपनी अचेतु है ॥ भावे सो
करतु मुख आवे सो कहतु कछू की सहत नाही सत्य ही को हेतु
है ॥ तुलसी अधिक अधिमाय है आज मिलते हू में सहाय कलि
कपटन के हेतु है ॥ जैवे की अनेक टेक एक टेक ह्वै वे की सो पेट
प्रिय पूतहित राम नाम लेतु है २२८ जागिये न सोइये विगारिये ज
नम जाइ दिन दुख रोइये कलश केह काम को ॥ राजा रंक रागी
न विरागी भूरि भागी औ अभागी जीव जरत प्रभाव कल वाम को
तुलसी कवंध कैसो धायवो विचारि अंध धंध देखियत जग सो
च परि नाम को ॥ सोइवो जो राम की समाध की सनेह सुख जागि
वो जो जीह जपे नीके नाम राम को ॥ २२९ ॥ वरन धरम गयो
आश्रम निवासन त्यौ त्रास हू चकित सो परावनो परो से
है ॥ करम उपासना कुवासना विनास ज्ञान वचन विवेक
वेष कन गति हरो सो है ॥ गोरख जगायो जोग भुगति भुगाये
भोग निगमनि योगते सो कलि हू छलो सो है ॥ काय मन वचन
सुभाय तुलसी है जाहि राम नाम को भरोसो ताही को भरोसो है २३०
सवैया ॥ वेद पुरान सुभाय सुपंथ कुमारग कोटि कुचालि चली है
काल कराल कृपाल नृपाल व राज समाज बड़ा ही छली है ॥ वर
ण विभागन आश्रम धर्म दुनी दुख दोष दरिद्र दली है ॥ स्वार
थ को परमारथ को कहि राम को नाम प्रताप बली है ॥ २३१ ॥
न मिटे दुख संकट दुःख दहे तप तीरथ जन्म अनेक अटो ॥ क
लि में विराग ज्ञान कहूं सब लागत कोटक जूट जटो ॥ नटल्यो
पित पेट कुपेटक कोटिक चेटिक कौठि कुठाठ ठटो ॥ तुलसी जो
सदा सुख चाहिये तो रसना निसि वासर राम रटो ॥ २३२ ॥
दम दुर्गम दान दया मष कर्म सु धर्म अधीन सबै धन कौं ॥
तप तीरथ साधन जोग विराग सों होइ नही दृढता तन कौं ॥
कलि काल कराल में राम कृपाल रहै अब लम्ब बड़ो मन कौं

तुलसी सब संजम हीन सबै एक राम अधार सदा जन की ॥ २३३॥ पाय सोदेह विमोह नदी तरनी न लही करनी न कछू की ॥ राम कथा वरनी न बनाय सुनी न कथा प्रल्हाद न धू की ॥ अब जोर जरा गारि गात गयो मन मानि गलानि कुवान न धूकी ॥ नीके के ठीक कहै तुलसी अब खंब बड़ी उर श्राघर दू की ॥ २३४ ॥ राम विहाय मरा जपते बिगरी सुधरी कवि कोलन हू की ॥ नामहिं तें गजकी गनिकाहू अजा मिलकी च लिगै चलि चूकी ॥ राम प्रताप बड़े कुस भाज बजाय रही प तिपंडु बधू की ॥ ताकौं भलो अजहूं तुलसी जेहि प्रीति प्रतीति है आखर दू की ॥ २३५॥ नाम अजामिनाम अजा मिल सब लता इन वारन बारन वार वधू की ॥ नाम हरो प्रहलाद वि षाद पिता भय सामति सागर सू की ॥ नाम सौं प्रति प्रतीत विहीन गिलौ कलि काल कराल सौ चूकी ॥ राखो है राम सोजा सुहिये तुलसी हुलसी बल आखर दू की ॥ २३६ ॥ सासन सक्र अधीन हतो दस कंधरसी रिपु जातन रुन्यौ ॥ जाके हे छाजत कोटिन कोटि सौ बाजत हैं कि धौ कोटिन सान्यौ ॥ लंक की प क मई छिन माह अजं की मीचु छुटी तिय रान्यौ ॥ भूकोभप टई ही तुलसी जो फरासो करो सो वरा सो नु तान्यौ ॥ २३७॥ धन सरी ॥ षेती न किसान कौं भिषारी कौन भीष बलि बनि कन कौं न बनिज न चाकर कौं चाकरी ॥ जीविका बिहीन लोग बिद्यमान सोच बस एकन सौं एक कहैं कहां जाइ काकरी ॥ बेद हू पुरान कही लोक हू बिलोकियत सांवरे सबै कौं राम रावरे कृपा करी दारिद दसानन दबाई दुनी दीन बन्धु दरत दहन देखि तुल सी हू हहा करी ॥ २३८॥ कुल कर तूति कीरति सरूप गुन जोवन जरा जरष रतन कछू कही ॥ राज काज कुपथ कुसा ज भोग रोग ही के बेद बुधि विद्या पाय बिबस वलकही कासौ कीजे रोष दोष दीजे काहि जाहि राम किधौ कलि काल कुलि षलल षल कही ॥ गति तुलसी की लषन न

कोऊ करत पीव सो छार छार पवै सो बल कही ॥ २४९ ॥ बबूर
बहे ढको बनाय बाग लाय पत रूधवे को सोऊ सुर तरु काटिय
तु है ॥ गारी देत नीच हरिचंदहू दधीच को अपने चना चवाइ
हाथ चाटियतु है ॥ आपु महा पातकी हसत हरि हरिहू को आ
पु है अभागी भूरि भाग जरियतु है ॥ कलि को कलुष मन मलि
न किये कहत मसक की पांसुरी पयोधि पाटियतु है ॥ २५० ॥ सु
निये कराल कलिकाल भूमि पाल तुम जाहि घालतु चाहो सो
कहौ धौ राखौ ताही कौ ॥ हौं तौ दीन दूबरो विगारो ढारो एक
रो न मोहू तोहू ताहि को सकल जग जाहि को ॥ काम को हला
य कै देखायत आंखि मोहि रातो मानि अक सकरे को आपुन्ना
हि को ॥ साहिब सुजान जानि स्वान हूं को पक्षि कियो राम नाम
हौं गुलाम राम साहि को ॥ २५१ ॥ सवैया ॥ सांची कहौं कलि
काल कराल में ढारो बिगारो तिहारो कहा है ॥ काम को क्रोध
को लोभ को मोह को मोहीसों आनि प्रपंच रहा है ॥ हो जगना
यक लायक आजु पै मोरिये टेव कुटेव महा है ॥ जानुकीनाथ
बिना तुलसी जग दूसरे सों करिहैं नह हा है ॥ २५२ ॥ भागीरथी
जल पान करौ अरु नाम है राम के लेत निते हौं ॥ मो सो न लै
नो न देबो कछू कलि भूलि न रावरी ओर चिते हौं ॥ ब्रह्मन जो
उगिलो उर गारि हौं त्यों हीं तिहारे हिये नहि ते हौं ॥ जानि
कै जोर करौ परि नाम तुमै पछितै हो पै मै न मिते हौं २५३ राज
मराल के वालक पेलि कै पालत लालत मूसर कौं ॥ सुचि सुं
दर सालि सकेलि सचारि कै बीज बटोरत कस कौं ॥ कलि
काल विचार की चालि हरी वहरी वहि सूक कछू धम धूसर कौं
गुन ज्ञान गुमान भावेरी वडो कलपद्रुम काटत मूसर कौं ॥ २५४ ॥
कीयो कहा पढिवे को कहा फल बूझि त बेद को भेद विचारै ॥
स्वारथ कौं परमारथ कौं कलि काम दराम को नाम बिसारै ॥
वादि बिषाद विषाद बडाई कै छाती फराये अरु आपनी जारै ॥
चारि हू को छहू को नव को दश आठ को पाठ सो कासो फारै ॥

२४५॥ आगम वेद पुरान बषानत मारग कोटिहू नाहि न जानै॥ जे मुनि ते पुनि आपुही आपुकौ ईस कहावत सिद्ध सयानें॥ धर्म सबै कलि काल ग्रसे जे जोग विराग कौं जाप पराने॥ को करि सोक मरै तुलसी बह जान की नाथ के हाथ विकाने॥ २४६॥ धूत कहौं अवधूत कहौं रजपूत कहौ जुलहा कहौ कोऊ॥ काहूकी बेटी सो बेटा न व्याहब काहू की जाति बिगारौं न सोऊ॥ तुलसी सर नाम गुलाम है राम को जाको रुचै सो कहो कछु कोऊ॥ मांगि के षायवो मसीति के सोइवो लेवे को एक न देबे कों दोऊ दोऊ॥ २४७॥ धनाक्षरी॥ मेरे जाति पाति नाहिं चाहौं जाति पांति कौन मेरे कोऊ काम कोन हौन काहू काम कौ॥ लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब भारी है भरोसो तुलसी के एक नाम कौ॥ अतिही अपनो सयानो नहि बूझै लोग साहिब के गोत गोत होत हैं गुलाम को॥ साधु के असाधु के भले को पोच सोच कहा कहा काहू द्वार परे जो हौं सोहौं राम को॥ २४८॥ कोउ कहत करत कुसाज दगाबाज बडो कोउक है राम को गुलाम षरो खब है॥ साधुजाने साधु षल जानै सह षल बानी झूठी सांची कोटि उठत हबूब है॥ चहत न काहू सों कहत काहू कछू सब की सहत उरपत तरन कब है॥ तुलसी को भलो पोच हाथ रघुनाथ ही के राम की भगत भूमि मेरी मति दूब है॥ २४९॥ जागै जोगी जंगम जती जमाति ध्यान धरें डरै उर भारी लोभ मोह कोह काम को॥ जागै राजा राज काज सेवक समाज साज सो छोटे सुनि समाचार बडे बैरी काम को॥ जागै बुधि विद्या हित पंडित चकित चेत चित जागै लाभी लालच धरनि धन धाम कौ॥ जागै भोगी भोग ही वियोगी रोगी राग बस सोवै सुष तुलसी भरोसे एक राम कौ॥ २५०॥ छप्पै॥ राम मातु पितु बंधु स्वजन गुरु पूज्य परमहित साहिव सषा सहाय नेह नातो पुनीतचित॥ देस कोस कुल धर्म धर्म धन धाम धरनि गति॥ जाति पांति सब

भांति लागि रामहि हमारि पति ॥ स्वारथ परमारथ सुपथ सुल भ रामते सकल फल ॥ कह तुलसिदास अब तब कबहु ये कराम ते मोहि भला ॥ २५१ ॥ महाराज वलि जावं राम सेवक सुख दायक ॥ महाराज वलि जाव राम सुन्दर सब लायक ॥ महा राज ब लि जाउ राम संकर दुख मोचन ॥ महाराज बलि जांउ राम राजीवः लोचन ॥ बलि जाउ राम करुना नि धिप्रणत पाल अ सारण शारण ॥ बलि जाउ राम कलि भय बिकल तुलसिदा स राम शारण ॥ जै ताड़िका सुबाहु मथन मारीचि मान हरि मुनिकर रक्षक दक्ष सिला तारन करुणा कर ॥ नृप गन बल मद सहित सम्भु को दंड विहंडन ॥ जय कुठार धर दर्प दल न दिन कर कुल मंडल ॥ जय जनक नगर अनंद कर सुख सागर सुखमा भवन ॥ तुलसी दास सुर मुकुट मणि जय जय जानुकी रवन ॥ २५२ ॥ जय जयंत जय कर अनंत सज्जन जन रंजन ॥ जय विराध बध विदुस विबुध मुनि गण भय भंजन ॥ जै निश्चरीक रूप करन रघुवंश बिभूषन ॥ सुभट चतुर दश सहस द लन त्रिशिरा खर दूषन ॥ जय दंडक पावन करन तुलसी दास ससय समन ॥ जग विदित जगति मति जैसि जै जै जै जै जान कि रवन ॥ २५३ ॥ जै माया मृग मथन गीध सिवरी उद्धारन ॥ जै कबंध मर्दन विराध तरु ताल बिदारन ॥ रवन वालि वल सालि थपन सुग्रीव संत हित ॥ कपि कराल भट भालु कटक पालन कपाल चित ॥ जै सिय बियोग दुख हेतु कृत सेत बन्ध वारिद वन ॥ दससीस विभीषन अभय प्रद जय जै जै जै जा नु कीरवन ॥ २५४ ॥ कनक कुधर केदार बीज सुंदर सुरमनि वर ॥ सींचिका मधुक धेनु सुधा मोपै पिमुद्ध तर ॥ तीरथ पति अंकुर सुरस मले सरक्ष पदि ॥ मरकत मणि साखा सुप त्र मंजरी लहत हि ॥ कैवल्य सकल फल कल्प तरु सुभ सु बरन सुख बरिस ॥ कह तुलसी दास रघुबंश मणि तो कि हीय तन धार सरिस ॥ २५६ ॥ जै सुभट समय पाय रन रारिन

मंडै ॥ जाइ सो जती कहाय विषय बासना न छांडै ॥ जाय धनिक बिनु दान जाय निर्धन बिनु धर्मेहि ॥ जाय सों पंडित पढ़ि पुरान जो रतन सुकर्मेहि ॥ सुत जाय मातु पितु भक्ति बिनु तिय सो जाय जेहि पतिन हित ॥ सब जाय दास तुलसी कहै जो न राम पद नेह रत ॥ २५७ ॥ कौन क्रोध तन दहेउ काम बस केहि नहि कीन्हेउ ॥ कौन लोभ दृढ फां बाँधि त्रलै गहरी दीन्हेउ ॥ कवन हृदै जिहि लाग कठिन अति नारि नैन सर ॥ लोचन जत नहि अंध भयो श्री पायक वन नर ॥ सुर नाग लोक महि मंडलहु मोक मोह दीन्हे उजय यत ॥ कह तुलसी दासनेउ परे जेहि रखि राम राजिव नयन ॥ २५८ ॥ मोह ॥ कमानसुत मैसे धान मे नारि बिलोकत बनितें बाँचे ॥ कोप कृसानु गुमान अधौ घट जोतिहि के मन आवन आंचे ॥ लोभसुमैं न टके वस है कवि ज्यों जगमैं बहु नाचन नाचे ॥ नीकेहैसधु सबै तुलसी पैरो रघुवीर के सेवक सांचे ॥ २५९ ॥ घना छरी वेप छुवनाय भले वचन कहै सुवाय जाय तौन वरीन जरनि धन धामकी ॥ कोटिक उपाय करि लाल पालियत देह सुध कहियत गति राम ही के नामकी ॥ प्रगटे उपासना दुरावे दुर्वास नहि मानस निवास भूमि लोभ लोभ मोह कामकी ॥ राग रोग ईर्षा कपट कुटि लाई भले तुलसी से भगत भक्ति चाहें राम की ॥ २६० ॥ कलिही लरनि तन कालही धरनि धन कालिही जीती गो रेल कहत कुचालि हैं ॥ कालही साधै गो कालही राजा समाज मो से कोउ कहा भारे भारे मही मेरु हालिहै ॥ तुलसी यहै कुभांति घने घर घालि आये घने घर घाल मतु घने घर घालिहै ॥ देखत सुनत समुझतहु न सूझै सोई कहू कबै नहि कालि कालहू की कलि है ॥ २६१ ॥ भयो नीत कालितिहू को लोक तुलसी से मंद सब सांच सुनि मानो न सकोच हैं ॥ जानतजो गहीं जहान जानत जान कीस की पोन भजत मत काय सची वहैं ॥ पापी परीवी पोच महा राज को कहाय महा राज ह

कहो हौं भ्राता विभीषन हौ ॥ निज अघ जाल कलि काल की करालता बिलोकि होत व्याकुल करत सों रैं सोच हौं ॥ २६२ ॥ धर्म के सेतु जग मंगल के हेतु भूरि भार हरिबे को धरो देह आनि नर को ॥ नीति सो प्रतीति पालि चलि प्रभु मानि लोक वेद राषि वे को है पन रघुवर को ॥ वारण विभीषण की ओर की कनावड़ी है सो प्रसंग सुनै अंग जरे अनुचर की ॥ राषि रीति आपनी जो होई कीजै वलि कोई तुलसी तिहारो घर जाय रहै घर को ॥ २६३ ॥ नाम महा राज को निवाहि नीकै कीजै और सब ही सिहात लोग ताहि जो सुहात है ॥ कीजै राम वार पाहि मेरी वोर चष कोर तोहि लागि रंक ज्यों सनेह कों ललात हैं ॥ तुलसी बिलोके हाल वालक कराल ता कृपाल को सुभाउ समुझत सकुचात हैं ॥ लोक एक भांति को बिलोक नाथ लोक बस आपनो न सोच स्वामी सोच ही सुखात हैं ॥ २६४ ॥ तौलौं लोभ लोलुप ललात लालची लवार वार वार लालच धरनि धन धाम को ॥ तवलौं वियोग रोग सोग भोग जानत के जुग सम लागत जीवन जाम जाम के ॥ तौलौं दुख दासा दारन दाह तीनि तनु तुलसी है किंकर बिमोह कोह काम को ॥ सब दुख आपनो निरापने सकल सुख जवलौं न जन भावे जाइ राजा राम को ॥ २६५ ॥ तवलौं लीनही नदीन सुष सपने न जहाँ तहाँ दुखी जन भाजन कलेस को ॥ तवलौं उरहने पांय फिरते पेटो खलाइ वारो मुष लहत पर भो देश को ॥ तवलौं दयावान दुसह दुष दारिद को साथरी को सोयवो औ आदि तो जो धेस को ॥ तुलसी न जौलों जाचो जानकी जीवन राम जा जनि के राजा सी सोती साहिब महेस को ॥ २६६ ॥ ईसन के ईस महाराजन के महाराज देवनि देव प्राण प्राणनि के प्राणही ॥ काल हू के काल मही भूतन के महा भूत कर के करम औ निदान के निदान हानि गम की अगम सुगम तुलसी ऊ को पति मान सील सिंधु करुणा निधान हो ॥ महिमा अपार काहू बाल कोप वार वार बड़ी सहिबी में नाथ बड़े ससा य कहो ॥

२६७॥ सवैया॥ आरत पाल कृपाल वै राम जहां सुमिरे तहांना
की है ठाढे॥ नाम प्रताप महा महिमा अकरे किये षोटेउ छोटे
उ बाढे॥ सेवक एकते एक अनेक भये तुलसी तिहूं तापन डाढे
प्रेम बडो प्रहलादहि को जिन पाहन ते परमेश्वर काढे॥ +
२६८॥ काढि कृपान भयानक ह्व पितु काल कराल विलोक
नि भागे॥ राम राम कहा सब ठाढ हैं थंभ में हां सुनि हां नर के
हरि गाजे॥ वैरि विदारि भये विकराल कहे प्रहलादहिं के अ
नुरागे॥ प्रीति प्रतीति वडी तुलसी तवते नर पाहन एजन
लो॥ २६९॥ अंतर जामिहु ते वडे वाहजानियें रामते नाम लि
येतें॥ धावत धेनु पलहाय लवाय जों वालक बोलन कान वियेतें
आपनी बूझि कहे तुलसी कहि वे के न वावरी वियेतें॥ २७०
॥ बालक बोलि दिराबलि काल को का पर काढि कुचाल
चलाई॥ पापी है बाप बडो परिताप ते आपनी ओर ते
पारि न लाये॥ भूरि दये विष भूरि भये प्रहलाद सुभाव सु
धा की भलाये॥ राम कृपा तुलसी जन कों जग होइ भल को
भलोये भलाये॥ २७१॥ कंस करी ब्रजवासिन को करतूति कु
भाति चले न चलाये॥ पांडू के पूत सपूत कपूत सुयोधन मो
करि छोह छलाये॥ कान्ह अपाल बडे नत पाल गये षल षेचर
षीस षलाये॥ ठोक प्रतीति कहें तुलसी हिय होय भलो भले को
ई भलाये॥ २७२॥ अब तीस अनेक भये अवनी जिन के डर ते
सुर सोच सुखाहीं॥ मानव दानव देव सतावन रावन घोरि जो
मग माहीं॥ ते मिलिये धरि धूरि सुतो धन जो बल ते वह
छत्र की छाहीं॥ बेद पुरान कहें जग जानि गुमान गुविंद
हि भावत नाहीं॥ २७३॥ जब नैन की प्रीति ठगे ठग श्याम पाया
न सषी हठि हों बरजी॥ नहि जानों वियोग सुरोग है आगेंजु
की तव हों तेहि सों तरजी॥ अव देह भये पर नेह के वाढे सो
पंज करे विरहा दरजी॥ व्रजराज कुमार बिना तुलसी जो अ
नंग भयो जियको तरजी॥ २७४॥ जोग कथा पठये ब्रज के सुस

वै सठ बरि की चाल चला की ॥ ऊधौ जी कौन कहै कुवरी जो बरी नर नाग स्हैरी हली ॥ जाहि लागे परि जान सोए तु लसीसी सो हागिनी नंद लाल की ॥ जानी सो जानि परी ह ठि की अब बाधियैगी कछु मोट कला की ॥ २७५ ॥ धनासरी पठयो है छपद छबीले हू कौं हं कहू षोजिके षवास षास गुज री कुचाल के ॥ ज्ञान को गढैया बिनु गिरकै परै बारषल की गढैया सो बढैया उर साल के ॥ प्रीती के बधिक सर रीनिहू अ धिक नित निपुन बिवेक हेरि देष सब काल के ॥ तुलसी कहं न बनै सहैं हीं बनैंगी सब रोग भयो जीको बियोग नंद ला ल भावते भरत जैहै सेवके ॥ २७६ ॥ हनूमान हैं कृपालला ल लाडिले लषन लाल भावते भरत जैहै सेवक सहाय जू ॥ बिनती करत दीन दुबरो दयाल देव बिगरी सुधारि आपु ली जिये सभाव जू ॥ मेरी साहिब निसदा सीस पर बिलसति देवै कौं हू दास की दें बाय न पांदे जू ॥ षीजहू मैं रीझि वे की बात राम रीझत हैं हरि को रिझावै राजा राम रघु राइ जू ॥ २७७ ॥ सवै या ॥ वेष बिराग को राग भरो मन भव कहो सति भाव है सो सों ॥ तेरी ही नाथ को नाम लै बेंचि हौं पात की पावर प्रानन थो सों ॥ एते बडे अपराध अघी तुमही कहू अब की मेरो तु मो सों ॥ स्वारथ कौं परमारथ कौं परिपूरन भो फिरि पादिन हों सों ॥ २७८ ॥ धनासरी ॥ जहां बाल मंक भये आवते मुनीऊ साधुम राम राजपै निद्ध मुब रिष सात की ॥ सिय को निवास लव कु श की जन महास बलसी छुवत छांह ताप गरे घान की रर सब लागि देव मुनि अह निसि सुव खेल राम पावन कि ये है भाल पान की ॥ बारि पुर दिग पुर बीस बिलसत भूमि अंकित जो जान की चरन जल गात की ॥ २७९ ॥ मर कत व रन परन फल मानिक से लसै जरा जूट जन रूष वेष हर हैं ॥ सुष मा की ढेर किधौं हदत सुमेर कीधौं संपदा सकूलमुद मंग ल को घर हैं ॥ देवर अमित जो समेत प्रीति सेइये प्रतीति

मनि तुलसी विचार का को घर है ॥ सुर सरि निकट सुहावनी अ
वनि सोहे राम रवनी को बर कलि कामतरु है ॥ २८०॥ देव
धनी पास मुनि वास श्री निवास जहां प्राकृत हू बट बूढ बस
त मरारि है ॥ जोग यज्ञ जाप को विराग को पुनीत पीठ रागि
न पे सीठ डीठ वाहरे निहारि हैं ॥ आये सो अंदशा पाय भलो
भले माय सिद्ध तुलसी विचारि जोगी करत पुरारि हैं ॥ रा
म भगतन कौं तो काम तरु देत सिव करे से ये करत फल
चारि हैं ॥ २८१॥ जहां बन पावनो सुहावनो बिहंग मृगदे
षत सोलागत आनंद पेट छूट सो ॥ सीताराम लषन निवा
स वास वास मुनि सिद्ध साधु साधुक सबै विवेक वृक्ष सो॥
झरना झरत झारी सीतल पुनीत वारि गंगा अति मंजुल म
हेश जटा जूट सो ॥ तुलसी जो राम सों सनेह सांचो चाहिये तो
सेइये सनेह सो विचि बात कूट सो ॥ २८२॥ मोह बिकलवनि
कलि मल साउज जानि जिय साधु गाढू विपन को निवारि
है ॥ होन्ही सुजाय राम पाय कसु सहाय लषनि समथ बडे
हेरि हेरि मारि हैं ॥ मंदाकिनी मंजुल कमान ऐसी वान ज
हां वारि धारा धीर धरि सुकर सुधारि हैं ॥ चित्र कूट अच
ल अहेरी बैठो घात मानो पातक के व्रात घोर सावज संघा
रि हैं ॥ २८३ ॥ सवैया ॥ लागि दिवारि पहर ठही ठह की कपि
लंक जथा परिषो की ॥ चारि चुवा चहू ओर चली लपटे
झपटी सो तमी चर तौकी ॥ को कहि जात महा सुष मा उपमा
तकि ठाकित है कवि कोकी ॥ मानो लसी तुलसी हनुमान
हिये विजई जग जीत की चौकी ॥ २८४॥ देव कहैं अपनी
अपनी अब लोकिन तीरथ राज चलोरे ॥ देखें मिटैं अपरा
ध अगाध निमज्जत साधु समाज भलोरे ॥ सो हसितासित
के मिल वो तुलसी हुलसै हिये हेरि हलोरे ॥ मानो हरे तृ
न चारो धरे बगरे बगरे सुर धेनु के धान कललोरे ॥ ८५॥
देव नदी कहँ जो तन जाति किये मनसा कल कोटि उघारे ॥

देखो चलो कगरो सुर नारि सुरं सब नारद षि नाम सवारो ॥ पु
न्य को साज विरंचि रचो तुलसी जी महातम जानि निहारो ॥
शोक की नीड परी हरि लोक विलोकत गंग तरंग तिहारो ॥ ८६
ब्रह्म जो व्यापक वेद कहे गम नहि गिरा गुन ज्ञान गुनी को ॥
जो करता हरता भरता सुर राम सो साहिब दीन दुनी को ॥
सोई भए द्रव रूप सही कहे नाथ विरंचि महेस मुनी को ॥
मानि प्रतीति सदा तुलसी जल काहे न सेवत देव धुनी को
८७ ॥ वारी तिहारे निहारे मुरा मुरारि सदा पर से पद पापलहो
गो ॥ ईश हो शीश धरो पै डरा प्रभु की समता बडे दर हौगो ॥ वार
हु वार शरीर धरो रघुवीर को ह्वै तत तीर रहोंगो ॥ भागी रथी विन
वो कर जोर नहोरीन पोर लगें से कहों गो ॥ ८८ धनाक्षरी ॥ लालनी
ललात बिललात द्वार दीन बदन मलीन मन मिटे न विसुरना ॥
ताकत सराध कै विवाहे कै उछाह कछु डोले बोल बूझत सबद
ढोल तूरना ॥ प्यासेन पावै वारि भूषेन चनक चारि चाहत अ
हारन बहोर हारि धूरना ॥ शोक को अगाध देख भरो लो लोचनो
लो देवीन द्रवे भवानी अन्न पूरना ॥ ८९ ॥ सवैया ॥ कानन
की पतु की करि की गुर की बतियां सुन दुष दुहा वे या घ
ट की मट की कर के लव साधु की संगति जान न लावे ॥
धीरज षंभ धरे तुलसी तहां औगुन तीन की दाम बना
वे ॥ ज्ञान रई ले मथे तन तक्र कौं तौ नव नीत निरंज
जन धावे ॥ ९० ॥ काम तजो और लोभ तजो और मो
ह तजो तो कहा भयो भाये ॥ भूष तजी और प्यास
तजी घर बार तजो जन जानि संगाये ॥ देश तजो औ
र भेस तजो अबला जो तजो तन कौं सुख धायें ॥ एते
तजो तो कहा तुलसी जो पै जान की नाथ सों प्रीति लगाये
९१ ॥ छप्पै ॥ भस्म अंग मर्दन अनंग संतत असंतह
र ॥ सीस गंग गिरजा अर्द्धंग भुवन भुजंगवर ॥ मुंडमाल
विधु माल भाल डमरू कपाल कर ॥ विबुध बंद तव कुमुद